अध्याय दो

समकालीन महिला कहानीकार तथा नासिरा शर्मा

अध्याय दो
समकालीन महिला कहानीकार तथा नासिरा शर्मा

परिवर्तन तो प्रकृति का नियम है। हर काल में साहित्य समाज के अनेक परिवर्तनों का साक्षी रह है। इस दिशा में आधुनिकता या नवजागरण काल ने नारी समूह को एक नयी दिशा प्रदान की। यूरोप में होनेवाले कई परिवर्तनों की ओर भारतीय नारी आकृष्ट हो गयी। शिक्षा के प्रचार प्रसार ने महिलाओं को अधिक जागृत किया। साहित्य के महत्व को समझकर नारी उससे अधिक जुड़ने लगी। सदियों से दबी कुचली अपनी वेदना को महिलाओं ने खुलकर साहित्य द्वारा उकेरना शुरू किया।

आधुनिक युग में नारी शिक्षा और बदलती युगीन मान्यताओं के कारण घर से बाहर कदम निकाल चुकी थी। अब नारी केवल विलास की सामग्री बनना नहीं चाहती है। समाज के सामने अपनी स्वतंत्रता की माँग पेश करती है। पाश्चात्य साहित्य और विचार धाराओं के प्रभाव नारी के सोचने और समझने की शक्ति में विस्तार और फैलाव पैदा किया। आर्थिक रूप से भी नारी स्वतंत्रता होने लगी। घर के चार दीवारों से बाहर निकलने के कारण समाज के प्रति प्रेम और विवाह के प्रति उनकी दृष्टि आदि बदलने लगी। नवीन युग में नारी की एक स्वतंत्र व्यक्तित्व स्थापित हो गया। अब नारी सूर की राधा, जायसी की पद्मावती, नीराला की रत्नावली, प्रसाद की श्रद्धा नहीं रही।

आज के नवीन युग मे समाज तथा परिवार में नर-नारी समान अधिकार तथा महत्व पा लिया है। औरत और मर्द समाज की दो सर्वसम्मत इकाईयाँ है। दोनों एक दूसरे का पूरक है तथा उनका संबन्ध अन्योन्याश्रित है। नासिराजी की राय में - "मर्द औरत

एक चने की दाल है और दोनों के सहयोग से ही बेहत्तर समाज की संरचना संभव है, जो परिवार को सुरक्षा शांति प्रेम और बेहत्तर भविष्य का वचन दे सकता है।"[1]

2.1 महिला लेखन का इतिहास

हिन्दी साहित्य में महिला साहित्यकारों ने कथा साहित्य, उपन्यास तथा कविता के विकास में जो योगदान दिया था, वह प्रशंसनीय है। कहानी लेखन में महिलाओं के पदार्पण करीब एक सौ वर्ष पहले हो गई थी। सन् 1907 में सरस्वती पत्रिका में बंगमहिला के 'दुलाईवाली' कहानी पहली महिला लेखन बनकर आयी। इस कहानी के प्रकाशन के बाद पुरुष सत्तात्मक समाज में महिलाओं के लिए एक द्वार खुल गया। उससे प्रभावित होकर महिलाएँ लेखन के क्षेत्र में नज़र आने लगीं। इन्होंने सामाजिक, पारिवारिक, दाम्पत्य तथा आर्थिक समस्याओं पर बडी बेबाकी से कलम चलायी। इस समय के प्रमुख लेखिकायें है - हेमवती देवी, उषा देवी, शिवानी, कमला चौधरी, रमादेवी, तेजरानी पाठक, मालती शर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान, महादेवी वर्मा आदि। इन लेखिकाओं की कथा संसार बहुत विशाल था। उन्होंने परिवर्तित नारी की मनःस्थितियों को कहानियों में उतरा।

नारी साहित्यकारों द्वारा जीवन और जगत की विभिन्न समस्याओं को लेकर रचनाएँ बहुत लिखी जा रही है। नारी अब यह महसूस करती है कि पुरुष के बराबर उन्हें भी अपने व्यक्तित्व विकास का अधिकार है। इस विचार के फलस्वरूप नारी लेखिकाओं ने प्रेम के बदले नारी शोषण, नारी पीडा, तथा नारी के विभिन्न अवस्थाओं को चित्रित करके कई कहानियाँ लिखी है। पुरुषों के प्रति दास्यवृत्ति को उतार फेंककर आज नारी सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक क्षेत्र में पुरुषों के समसाथी बनकर खडे हैं।

---

1. औरत के लिए औरत - नासिरा शर्मा - पृ. 7

2.2 नारी लेखन का उद्देश्य

स्त्री लेखन का महत्वपूर्ण उद्देश्य स्त्री की विभिन्न भूमिकाओं को मानव समाज से परिचय कराना था। आधुनिक युग में स्त्री अपनी मानवीय गरिमा और अधिकार के समझकर उन तमाम नारी को शक्ति देना चाहती है जो अधकारों के लिए संघर्षरत है। परिवार, समाज, देश और पूरे विश्व की समस्याओं को लेखिकाओं ने बडे संवेदनशील एवं गहराई से समेटने लगी। विधवा विवाह, बाल विवाह, पर्दाप्रथा, आदि सामाजिक विषयों पर कहानियाँ लिखने लगी। महिला साहित्यकारों ने वर्तमान जीवन को चुनौती के रूप में स्वीकार करके जीवन को यथार्थवादी दृष्टि से देखने लगी। जीवन में जो कटुता, कलुषता, अशांति, विद्रोह, आस्था एवं संघर्ष को आज की सजग लेखिका अभिव्यक्ति देने में जुडी है। उन्होंने बाह्य वातावरण से ज्यादा व्यक्ति मन का चित्रण बहुत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया।

स्वातंत्र्योत्तर समाज में नारी ने बहुत सम्मान प्राप्त किया है। वह मानवी रूप धारण कर लिया है। कहानी में नारी के तीन रूप दृष्टमान है। पहला रूप सदियों से चलती आ रही शोषण अत्याचार की स्थितियों का शिकार। दूसरा तो नयी परिस्थितियों से पैदा हुई समस्याओं से जूझती नारी। तीसरा आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होकर परंपरागत नारी को चुनौती देनेवाली नारी। समकालीन महिला लेखिकाओं ने संघर्षरत इन नारियों का अंकन मात्र नहीं, बल्कि समाज, देश और पूरे विश्व की समस्याओं को बडे संवेदनशील एवं गहराई से समेटने की कोशिश की है।

उन्नीसवीं सदी के अंत के दो दशक में प्रकाशित कथा साहित्य में ऐसी स्त्री पात्रों का वर्णन है जो चुनौतियों को दृढ़ता से स्वीकार करके किसी निर्णय लेने के लिए पुरुषों का मुँह नहीं ताकते हैं। महिला साहित्यकारों की एक ही आवाज़ थी महिलायें

समाज में शोषित है। महिला लेखिकाएँ अपनी रचना द्वारा यही बताना चाहती है कि नारियाँ पुरुष के समान स्वतंत्र होकर जीने का अधिकार चाहती है। नासिराजी यही कहती है कि - "स्त्री और पुरुष दोनों इनसान का रूप है, उसकी विभिन्नता ही संसार का सौंदर्य एवं संबन्धों में निहित सुख हैं। इन दोनों की रिश्तों में प्रेम के साथ सम्मान का होना बहुत ज़रूरी है। केवल प्रेम से जीवन नहीं चल सकता। यदि प्रेम में सम्मान होगा तो एक दूसरे के विचार अहसास की कदर करनी पडेगी।"[1]

भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कहानी के क्षेत्र में नवीनता आ गई है। साहित्य की रचना प्रक्रिया में एक गहराई तथा उसके कलात्मक स्तर पर एक ऊँचाई दिखाई पडने लगी। केवल पुरुष की दृष्टि से सामाजिक जीवन तथा साहित्य देखा-परखा जा रहा था। अब महिला लेखन के बाद, नारी पुरुष के संबन्धों में नये मूल्यवान, सामाजिक जीवन में नारी के महत्व, नारी की उपयोगिता, नारी की आवश्यकता, नारी के अधिकार तथा परिवार, विवाह, दाम्पत्य जीवन, और उनसे संबन्धित अनेकानेक समस्याओं को महिला लेखिकाओं ने अपने विशिष्ट दृष्टिकोण द्वारा प्रस्तुत किया। वे सामाजिक चुनौतियों को बडी सूक्ष्मता से समझा और कुशलता से अभिव्यक्ति भी की। कभी-कभी ये चुनौतियाँ तथा समस्याएँ वैयक्तिक भी है और सामाजिक भी। कुमार कृष्ण की राय में "हमें स्वयं को स्त्रीवादी प्रमाणित करने के लिए न केवल समकालीन होने के लिए कर्तव्य बोध से प्रेरित होकर ही कहानी लिखनी चाहिए। जल्दबाजी में बहुत कुछ कर जाते है और उसको एक नाम देने लगते हैं स्त्री साहित्य।"[1] हिन्दी कहानी जगत की समकालीन लेखिकाएँ हैं - मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, चन्द्रकांता, ममता कालिया, शिवानी, मंजुल भगत, मृदुला गर्ग, मृणाल पाण्डे, उषा प्रियंवदा, कृष्णा अग्निहोत्री, चित्रा मुद्गल, मालती जोशी, निरुपमा सेवती आदि।

---

1. औरत के लिए औरत - नासिरा शर्मा - पृ. 17

2.2.1 मन्नूभण्डारी

मन्नू भण्डारी की कहानियाँ जीवन के अधिक निकट हैं। नारी मन की क्षमता और दुर्बलता का चित्रण, नारी पुरुष के द्वन्द्वात्मक संबन्धों तथा टूटते दाम्पत्य जीवन आदि इनकी कहानियों की विशेषताएँ है। उन्होंने प्रेम विवाह, तलाक आदि को कहानी का आधार बनाया है। उनकी अधिकांश कहानियों में चित्रित नारी देवी और दानवी के दो छोरों के बीच टकराती पहेली नहीं, बल्कि हाड-मांस की दानवी है। उन्होंने अबला नारी का चित्रण पुरुष की सहानुभूति हेतु नहीं किया, बल्कि नारी का यथार्थ परक चित्र प्रस्तुत करने हेतु किया है। मन्नु भण्डारी की कहानियों में वह शक्ति है जिससे उन्होंने भ्रम और शोषण के बीच पिसती नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व को ढूढ़ निकाली है। 'मैं हार गयी' (1957), 'यही सच है' (1966), 'एक प्लेट सैलाब' (1968), 'त्रिशंकु' (1978), 'आँखों देखा झूठ' (1976), 'तीन नीगाहों की एक तस्वीर', 'तीसरा आदमी', 'श्रेष्ठ कहानियाँ' आदि प्रमुख कहानी संग्रह है। 'यही सच है' कहानी में उन्होंने नारी मनोविज्ञान और नारी के आंतरिक संघर्ष को चित्रित किया है। 'तीसरा आदमी' कहानी में स्त्री पुरुष संबन्धों की समस्या को रेखांकित किया है। उनकी कहानियों की विशेषता यह है कि उन्होंने बडी सहजता तथा सजीवता से मानव मन की कुण्ठाओं का चित्रण किया है।

2.2.2 दीप्ति खण्डेलवाल

समकालीन कहानी में दाम्पत्य जीवन का नया चित्र पाठक के सम्मुख रखनेवाली लेखिका के रूप में दीप्ति खण्डेलवाल का नाम बहुत विख्यात है। इन्होंने अपनी रचनाओं में संवेदनाओं और रिश्तों की गहरी घाटियों में गहराई तक उतरकर देखा है, और उसे जिस बेबाकी से व्यक्त किया है। दीप्तिजी ने अपनी अधिकांश कहानियों में पति-पत्नी के बनते टूटते संबन्धों को व्यक्त किया है। कुछ कहानियों में तो दीप्तिजी ने

अपने भोगे हुए यथार्थ का चित्रण भी किया है। अभावग्रस्त दलित औरत, दाम्पत्य जीवन का संघर्ष, नारी मनकी पीडा, अकेलापन, पति-पत्नी के बीच टकराहट आदि बातों को उन्होंने कहानियों का मुख्य केन्द्र बनाया है 'हव्वा', 'संधिपत्र' (1976), 'देह की सीता', 'शेष-अशेष', 'कटुवे सच', 'धूप के अहसास' आदि उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं।

2.2.3 कृष्णा सोबती

कृष्णा सोबती व्यक्तिपररक मूल्यों का कहानीकार है। उन्होंने अपनी सशक्त रचनाओं द्वारा हिन्दी कहानी-संसार को हलचल मचा दी है। उन्होंने नारी के आन्तरिक उलझनों और दुविधाओं को बेहतर समझा और अपनी कहानियों में अंकित किया। इनकी नारी सामान्य भारतीय नारी है। उसे अपनी अभिव्यक्ति के लिए पुरुषों के माध्यम की आवश्यकता नहीं। इनकी कहानियाँ है 'डार से बिछुडी', 'बादलों के घेरे', 'अंधेरे के जिन्दगीनामा', दिलोदानिश 'मित्रो मरजानी', 'यारों का यार', 'तिन पहाड', 'सिक्का बदल गया', 'ऐ लड़की' आदि। बहुचर्चित कहानियों में स्त्री पुरुष के यौनाकर्षण तथा काम वासना और औद्योगिक संस्थाओं दफ्तरों में स्त्रियों की नौकरी की वजह से उनके पारिवारिक संबन्धों में विशेषकर पति-पत्नी संबन्ध में उत्पन्न विघटन आदि का चित्रण हुआ है। इनकी कहानियों में प्रेम का स्वरूप आत्मिक से शारीरिक की ओर विकसित होता है। प्रेम विवाह, सामाजिक स्थिति, नौकरी, अजनबीपन, अकेलापन, कुण्ठा, आस्थाहीनता, अविश्वास, और वर्तमानकाल के जीवन की अवस्थाएँ उनकी कहानियों में स्थान पाती है। सन् 1980 को उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

2.2.4 ममता कालिया

ममता कालिया की कहानी भारतीय परिवेश में दम घुटनेवाली नारी की मानसिकता को व्यक्त करती है। इसके अनुसार नारी सर्वगुण संपन्न होने पर भी उन्हें

गृहस्थी के अतिरिक्त अन्य प्रतिभा को दिखाने का अवसर नहीं मिल रहा है और नारी का स्थान हमेशा पुरुष के बाद ही आता है। ममता कालिया ने अपने लेखन में रोज़मरी के संघर्ष में युद्धरत स्त्री का व्यक्तित्व उभारा और अपनी रचनाओं में रेखांकित किया कि स्त्री और पुरुष का संघर्ष अलग नहीं। उन्होंने अपने कथा साहित्य में हाडमाँस मात्र पति, साँस, घर के सभी लोगों को संभालना ही होता है। ममता कालिया की कहानियों में पति-पत्नी के बीच की प्रेम रहित संबन्धों को चित्रित किया है। जीवन की जटिलताओं के बीच रहे उनके पात्र एक निर्भय और श्रेष्ठतर सुलूक की माँग करते हैं। जहाँ आक्रोश और भावुकता की जगह सत्य और संतुलन का आग्रह भी दिखाते हैं। उनका प्रसिद्ध रचना है - 'छुटकारा', 'उसका यौवन', 'बेघर', 'नरक दर नरक', 'जाँच अभी जारी है', 'प्रतिदिन' और 'चर्चित कहानियाँ' आदि।

2.2.5 शशि प्रभा शास्त्री

शशि प्रभा शास्त्री की कहानियाँ बहुधा नारी प्रधान है। घुमा फिराकर हर कहानी किसी नारी को केन्द्र में रखकर ही लिखी गई है। उनकी कहानियों में प्रेम के रोमांटिक स्वरूप के विविध रूपों का निरूपण मिलता है। इन्होंने अपनी रचनाओं में प्रायः नारी की प्रेम संबन्धी समस्याओं को उठाया है और उन्हें एक सीमित क्षेत्र में और स्तर पर अभिव्यक्ति भी दी है। इनकी कहानियों की नारियाँ अपनी योग्यता के अनुसार सम्मान नहीं पाती है। पति से योग्य होने पर भी उसे ही घर में अपनी जिम्मेदारी मानकर पति की आशा का पालन करना है। 'रीढ', 'एक तूफान एक सोता', 'काश मैं सुधा होती' आदि उनकी कहानियाँ हैं। उनके अनुसार नारी शिक्षित और स्वतंत्र होने पर भी उतनी स्वतंत्र नहीं है।

2.2.6 इन्दुबाली

इन्दुबाली ने कथा साहित्य में प्रायः नारी की समस्या को उठाया है। जिसमें नारी की सहजता कोमलता और भावुकता उजागर होती है। इनकी कहानियों की नायिका आधुनिक है। वह अपने अस्तित्व को पहचानती है, फिर भी वह भारतीय नारी है। वह नारी अपना हक भी मांगती तथा आवाज़ भी उठाती है। उनकी कहानियों में नारी का स्वरूप स्वतंत्र है। उनकी नारी ऐसी है जो किसी प्रकार के अत्याचार को सहज नहीं करती। 'अंधेरे की लहरी', 'सोये प्यारी की अनुभूति' आदि उनकी कहानियाँ है।

2.2.7 मृदुला गर्ग

मृदुला गर्ग की कहानियों में मानव जीवन के विभिन्न पक्षों को विभिन्न कोणों से छुआ है। आधुनिक नारी चेतना को प्रस्तुत करने का प्रयत्न करती है। स्त्री चाहे भारत की हो या अमेरिका की उच्चवर्ग की हो या निम्न वर्ग की हो या निम्न वर्ग की पुरुष द्वारा श्रम औऱ सेक्स दोनों रूपों में देह शोषण उनकी नियती है। ऐसी हालत में नारी मुक्ति संभव नहीं है। नारी आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से अपने पैरों पर खडे रहकर भी अपना संतुलन नहीं खोती है। वह हमेशा अपने मूल्यों की रक्षा करती है। जो मनुष्य मात्र को सहज जीवन प्रदान करती है। मृदुला गर्ग की कहानियों में व्यक्तिपरक तकलीफ बहुत ज्यादा है। 'डैफोडिल जल रहे है', 'टुकडा-टुकडा आदमी', उर्फ सम ग्लेशियर से', 'दुनिया का फायदा' आदि उनके प्रमुख कहानी संग्रह है। उनकी 'मेरा' शीर्षक कहानी आज के मध्यवर्गीय परिवार की नौकरी पेशा, स्त्री-पुरुष के संतान के जन्म की समस्या पर केन्द्रित है। 'अवकाश' कहानी टूटते पति-पत्नी संबन्धों की कहानी है। 'रुकावट' कहानी प्रेम और यौन दृष्टिकोण के परिवर्तनों को व्यक्त करती है। 2013 को उन्हें केन्द्र साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

2.2.8 निरुपमा सोबती

निरुपमा सोबती एक ऐसी महिला लेखिका है जिन्होंने अपनी कहानियों के सारे पात्र जीवन से ढूँढ लिये हैं। नारी और जीवन के विभिन्न संघर्षों का चित्रण इनकी कहानियों में हुआ है। कथ्य और शिल्प की दृष्टि से उनकी रचनाएँ समकालीन कहानी की महत्वपूर्ण उपलब्धी है। उनकी कहानियों में ऐसी नारियों को चित्रित है जो पुरुष का सहचर्या होकर भी दाम्पत्य जीवन में अधिकतर मानसिक संघर्ष से जूझती है। कहीं तो तलाक लेकर स्वतंत्र हो जाती है कही तो मातृत्व के कारण तलाक नहीं कर पाती है। 'खामोशी के पीते हुए' उनका प्रसिद्ध कहानी संग्रह है। 'ठहरी हुई खोंच' उनकी मनोविश्लेषणात्मक कहानी है। 'संतुलन' एक प्रेम कहानी होने के साथ ग्रामीणों की शोचनीय हालत का चित्रण भी है। अतः निरुपमा सोबती की कहानियों में चित्रित नारी अपने जीवन के विभिन्न संघर्षों का सामना करती हुई जीती है।

2.2.9 चित्रा मुद्गल

समकालीन भारतीय महिला कहानिकारों में चित्रा मुद्गल का विशिष्ट स्थान है। उनका जन्म अभिजात वर्ग का है, तो भी विभिन्न वर्ग के कथ्य पर उनकी गहरी पकड है। उन्होंने मध्य-निम्न वर्गीय दोनों नारियों को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। उनकी नारी पात्र इतने साहसी भी कि जो परंपरागत नारी को जड से टुकराते हुए स्वतंत्र जिन्दगी जीती है। उन्होंने विधवा नारी, नौकरी पेशा नारी और शोषित नारी के जीवन की दुरवस्था का चित्रण कहानियों में किया। 'शून्य' कहानी में ऐसी एक नारी है जो तलाक लेते समय बच्चों को पिता के साथ छोडना चाहती है। इसलिए कि पुरुष जिम्मेदारी से मुक्त होकर स्वतंत्र न रह सके। 'पाली का आदमी', 'त्रिशंकु' आदि कहानियों में हम नारी के कई रूप देखते हैं जो दुख को सहना नहीं बल्कि विद्रोह कर कुछ नया स्थापित करना

चाहती है। उनकी कहानियाँ ऊपरी तौर पर भले ही किसी वाद का राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वा का शोर नहीं करते। वह तो मानवीय संस्कारों से गहराई से जुडी हुई है। 'इस हमाम में', 'ग्यारह लंबी कहानियाँ', 'ज़हर ठहरा हुआ' आदि उनकी प्रसिद्ध कहानी-संग्रह है। महानगरीय निम्न एवं मध्यवर्गीय परिवेश की यथावत् अभिव्यक्ति अपनी संपूर्ण हार्दिक सहानुभूति के साथ उनकी कहानियों में हुई है।

2.2.10 शिवानी

समकालीन महिला कथा लेखिकाओं के बीच शिवानी जी ने जो स्थान आर्जित किया है, वह काफी ऊंचा है। इनकी रचनायें जीवन के हर रंग से रंगी हुई है। उनकी रचनाओं में कही नारी की समस्या है तो कही पारिवारिक और सामाजिक। शिवानीजी की कहानी में नारी मन की पकड है और वे अपनी सजग दृष्टि से परिवेश को यथार्थ के धरातल पर अंकित करने में सक्षम है। शिवानीजी की शैली सीधे हृदय पर असर करती है। उनकी कलम का जादू सभी चट्टानों तोडकर अन्दर की तरलता आँखों तक ला देता है। उनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह है - 'विषकन्या', 'कृष्णाकली, रति विलाप, लाल हवेली, चौदह फेरे, कस्तूरी मृग, अपराधिनी आदि। इनके लेखन में भावों का सुन्दर चित्रण, भाषा की सादगी तथा पहाडी लोगों के संस्कृति का जीता जागता वर्णन होता था। उनके लेखन में कोई कल्पना की उडान नहीं, वह सच्चाई से जुडा है।

2.2.11 चन्द्रकान्ता

चन्द्रकान्ता हिन्दी के विख्यात लेखिका है। उनका जन्म श्रीनगर में हुआ था। पिता अंग्रेज़ी के शिक्षक तथा हिन्दी के प्रचारक थे। पिता से प्रभावित होकर उनके मन में भी राष्ट्रभाषा के प्रति सम्मान जागा। उन्होंने भी पिता के राहों पर चलकर हिन्दी की सेवा की। काश्मीर की केसरी आबो हवा में पली बढी चंद्रकान्ता की कहानियों में वहाँ की

सभ्यता और संस्कृति का अंदाज़ा सहज समाया हुआ है। वहाँ के लोक और लोक संस्कृति की गहरी पहचान उनकी लेखनी में सफलता के साथ व्यक्त करती है। उन्होंने संयुक्त परिवारों की घुटन, विदेशवास की सुविधाओं के मोह आदि का चित्रण किया है। उनकी कहानियों में दाम्पत्य जीवन का भारतीय और पाश्चात्य दोनों संस्कृतियों का सम्मिश्रित रूप मिलता है। 'सलाखों के पीछे', 'गलत लोगों के बीच', 'काली बरफ', 'पोष्णूल की वापसी', 'देहलीज़ पर न्याय', 'कोठे पर काग', 'सूरज आने तक', 'अब्बू ने कहा था', 'कथा नगर' आदि उनकी प्रमुख कहानियाँ है। उन्होंने पुरानी रूढियों और संस्कारों की अपेक्षा आधुनिक जीवन वृत्ति को श्रेष्ठ बताया है। साहित्य सेवा के लिए उन्हें 2005 में बिड़ला फाउंडेशन के व्यास सम्मान से विभूषित किया गया है। उनकी रचनाओं के विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं।

2.2.12 मंजुल भगत

मंजुल भगत युवा पीढ़ी की उन समर्थ लेखिकाओं में से है, जिन्होंने अपने परिवेश की विद्रुपताओं और क्रूरताओं को गहरी रूप से देखा है। उनकी कहानियों में नारी शोषित और उत्पीडित है, जो कही पत्नी के रूप में, कही वधु के रूप में पीडित है। वेश्या बनकर कई नारी मारी जाती है और उन्हें समाज के डर से जीवन बिताना पडता है। 'क्या छूटा गया', 'बावन पत्ते' और 'जोकर' आदि उनके प्रमुख कहानी-संग्रह है। 'अपना-अपना नशा, 'करवट दर करवट', 'अहसास', 'चिथडा गुडिया', 'कसर' आदि कहानियों में शोषित एवं दर्दपूर्ण जीवन जीती हुई नारी का चित्रण हुआ है। उन्हें हिन्दी अकादमी तथा दिल्ली के साहित्यकार सम्मान से अलंकृत की गई।

2.2.13 उषा प्रियंवदा

उषा प्रियंवदा ने नारी जीवन की विसंगतियों को सोचा और समझा है। पारंपरित एक रसता, ऊब, असफलता तथा सूनेपन की पीडाओं से मुक्त होने की प्रक्रिया

उषाजी की कहानियों में परिलक्षित होती है। यहाँ एक ओर संस्कार बद्ध जडता है तो दूसरी ओर नव्यतम प्रक्रिया एवं सजगता है। उषा के पात्रों में निरीहता नही, किंतु कभी-कभी अव्यवस्थता प्रतीत होती है। 'एक कोई दूसरा' और 'कितना बडा झूठ' उनके कहानी संग्रह हैं।

2.2.14 कृष्णा अग्निहोत्री

श्रीमती कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में एक ओर अनुभूति पक्ष की व्यक्तिगत जिम्मेदारी और ईमानदारी है तो दूसरी ओर भाषा शैली का वैभव है। इनकी कहानियों में नारी रोती और सहती है। परंपरा के कारण आज भी समाज में औरत वही है जो पति के अनुसार चल सकें। आदर्श एवं यथार्थ रखने पर भी उनकी स्त्री पात्र देवी भी नहीं है, न दानवी भी। उनकी नजर में औरत सिर्फ औरत है जो भावुकता की हद तक भावुक और उत्तरदायित्व की सीमा तक कर्तव्यपारायण। उनकी कहानियाँ किसी ढाँचे को तोडने की वजह से उसके कमजोरी तथा कथन को अभिव्यक्त करती हैं। आधुनिक समाज की बहुविध विडंबनायें, भ्रष्टाचार तथा अनैतिक कार्यों का चित्रण उनकी रचनाओं में हुआ है। 'नपुंसक', 'जिन्दा आदमी' हैं। 'नानी अम्मा मान जाओ', 'मैं अपराधी हूँ', 'अभिषेक', 'यह क्या जगा है दोस्तों', 'बेटी बाहर की छोकरी', 'वो तेरा घर ये मेरा घर', 'मोरी रंग दी चुनरिया' आदि उनके कहानी संग्रह है।

2.2.15 मालती जोशी

मालती जोशी हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं को गति देनेवाली महिला कहानीकार है। मालतीजी के नारी पात्र मध्यवर्गीय है जो अपने परिवार को जोडे रखने में विश्वास रखती है। इनकी कहानियों में नारी पारिवारिक नारी है जो माँ होने के कारण बच्चों की भावनाओं को जानती है। उनके अनुसार नारी ही नारी हृदय को भली भाँती

समझ सकती है। 'पराजय', 'मन धुआ-धुआ', 'प्रतिदिन' आदि कहानियाँ इसके प्रमाण हैं। 'मध्यान्तर', 'एक घर सपनों का' आदि उनके कहानी संग्रह है। उन्होंने अपनी कहानियों में दाम्पत्य, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को ही उभारा है। हिन्दी अकादमी द्वारा साहित्य कृति सम्मान तथा मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा भवभूति अलंकरण सम्मान भी उन्हें मिला।

2.2.16 मैत्रेयी पुष्पा

समकालीन महिला कहानिकारों में मैत्रेयी पुष्पा का नाम अग्रण्य रहा है। उन्होंने भारतीय समाज की नारियों के दीन-हीन दशा को चित्रित किया। नारी के अधिकार एवं स्वतंत्र चेतना को भी अपनी कहानियों में प्रतिपाद्य किया। उन्होंने दीन-हीन, तथा अपेक्षित-शोषित नारियों के आक्रोश और विद्रोह को सशक्त वाणी प्रदान की। इसके साथ उसकी रचनाओं में ग्रामीण परिवेश भी अंकित हुआ है। 'चिनहार, लालमनियाँ, गोमा हँसती है, 'फैसला', 'त्रिया हाठ', 'सिस्टर', 'सेंघ अब फूल नहीं खिलते', 'तुम किसकी हो बिन्नी' बोझ आदि उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं। उनकी कहानियों में विचारों तथा समाज की परिस्थितियों का सच्चाई भी दृष्टिगोचर है। इन कारणों से होनेवाली समस्याओं का दर्द भी उनकी कहानियों में अभिव्यक्ति हुआ है।

2.2.17 मृणाल पाण्डे

हिन्दी के प्रसिद्ध लेखिका मृणाल पाण्डे पत्रकार एवं टेलीविज़न की जानी मानी हस्ती है। समाज सेवा में उनकी गहरी रुचि रही है। 2001 तक हिन्दी दैनिक हिन्दुस्तान की संपादिका थी। इक्कीस वर्ष उम्र में पहली कहानी हिन्दी सप्ताहिक धर्मयुग में छपी। तब से लगातार लेखन कर रही है। मृणाल पाण्डे की कहानियाँ आधुनिक समाज में व्याप्त विसंगतियों का आइना है। उनकी कहानियों में भ्रष्टाचार, वेश्यावृत्ति, स्वार्थलोलुपता

अवसरवादिता और झूठ को सच करने में लगे सामाजिकत्व हावी रहता है। अपनी कहानियों द्वारा आजकल की भ्रष्ट राजनीति और नारी जीवन की विसंगतियों का हृदयहारी चित्रण मिलता है। उनकी व्यंग्यात्मकता और परिहास बोध उनकी कहानियों के पाठ को अनेक स्तरीय अर्थवत्ता देती है। 'लेडीस टेलर, दरमियान, 'यानि की एक बात थी', 'एक स्त्री का विदागीत', 'चार दिन की जवानी तेरी' आदि उनके प्रमुख कहानी-संग्रह है।

2.2.18 मेहरुन्निसा परवेज़

हिन्दी कहानी साहित्य में मुस्लिम मध्यवर्गीय चेतना की कहानीकार के रूप में मेहरुन्निसा परवेज़ का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी कहानियाँ जीवन की समग्रता को प्रस्तुत करती है। उन्होंने बडी सरलता और ईमानदारी से जीवन की विविध समस्याओं को यथार्थ के साथ दिखाया है। आदिवासी जीवन और संस्कृति उनकी रचनाओं में मिलते हैं। आदिवासी के लिए उन्होंने लिखा ही नहीं उनकी सेवाएँ भी की थी। मेहरुन्निसा ने नारी दर्द को समझा और उसे बरखूबी चित्रित किया। उनकी नारी निम्न वर्गीय है जो पैसे के अभाव में यातनायें सह रही है। मुस्लिम स्त्रियाँ हमेशा पर्दा में रहकर अपने दुःख को दबाती हुई घुटन भरी जिन्दगी जी रही थीं। उनके दुःख, उनकी समस्याओं को परवेज़ ने अपनी कहानी द्वारा वाणी दी। 'आदम और हव्वा' उनकी प्रसिद्ध कहानी है। मेहरुन्निसाजी ने अपने निजी जीवन में जो वेदना का अनुभव किया वही उनकी कहानियों में परिव्याप्त है।

2.2.19 प्रतिभा वर्मा

प्रतिभा वर्मा की कहानियों में आज के सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था के यथार्थ को जीवन्त रूप में प्रस्तुत करने की चाह मिलती है। इनकी कहानियों में सामाजिक विद्रुपताओं एवं अमानवीय कुत्साओं पर करारा व्यंग्य किया गया है। 'धूप साया साया' उनके प्रमुख कहानी संग्रह है।

2.2.20 नीलिमा सिंह

नीलिमा सिंह ने उच्चवर्ग के खोखले आदर्श विलासियता, कुण्ठा और प्रेम को अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार जब पति पत्नि दोनों एक दूसरे की जरूरतों और भावनाओं को समझेंगे तभी दाम्पत्य जीवन सुखमय हो जायेगा। 'स्वीकार है मुझे', 'धूप के दर्पण में', 'मीरा एक अंतरंग परिचय' आदि उनकी कहानियाँ है।

2.2.21 कुसुम अंसल

विषय वैविध्य की दृष्टि से कुसुमाजी ने अनेक बिन्दुओं का स्पर्श अपनी कहानी में किया है। सामाजिक विडंबनाओं ने अनेक बिन्दुओं को स्पर्श किया है। सामाजिक विडंबनाओं पर खुलकर व्यंग्य किया है। प्रेम के नये स्वरूप उभारकर विवाह संस्था को भी चुनौती दी। विवाह के खोखलेपन को कहानी में उजागर किया। समाज एवं परिवार में व्याप्त नारी शोषण एवं उससे उत्पन्न अद्‌भुत ज्वलन्त समस्याएँ उनके प्रमुख विषय रहे हैं। 'एक और पंचवटी', 'उदासी आँखों', 'नींव का पत्थर' आदि उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं।

2.2.22 मणिका मोहनी

मणिकाजी की कहानी की एक विशेषता यह है कि उनमें कहने की अद्‌भुत क्षमता है। वे जिन्दगी की छोटी-छोटी बातों से कहानी का ताना-बाना बुनने की कला में प्रावीण है। उनमें स्त्री-पुरुष संबन्धों के प्रति एक बोल्ड दृष्टि नज़र आती है। 'अभी तलाश जारी है' उनका प्रमुख कहानी संग्रह है। उनकी कहानियों में विविधता का अभाव परिलक्षित होता है।

2.2.23 गीतांजलिश्री

गीतांजलिश्री हिन्दी की जानी मानी कथाकार और उपन्यासकार है। दिल्ली की हिन्दी अकादमी ने उन्हें 2000-01 के साहित्य सम्मान से अलंकृत किया है। उनकी पहली कहानी 'बेलपत्र' (1984), हंस में प्रकाशित हुई थी। 'माई', 'हमारा शहर उस बरस', 'अनुगुंज', 'वैराग्य' आदि उनकी प्रकाशित कहानी संग्रह है। अपने लेखन में वैचारिक रूप से स्पष्ट और प्रौढ़ अभिव्यक्ति के ज़रिए उन्होंने एक विशिष्ट स्थान बनाया है।

2.2.24 नासिरा शर्मा

समकालीन युग में जिन महिला कहानीकारों ने हिन्दी कहानी साहित्य में अपनी पहचान बनाई है उनमें नासिरा शर्मा का विशिष्ट स्थान है। मुस्लिम कथा लेखिका के रूप में उन्हें अधिक ख्याति मिली है। इनकी कहानियाँ उच्च और मध्यवर्गीय मुस्लिम संस्कृति का परिचय देती है। नासिराजी की कहानियों का केन्द्र-बिन्दु मानवतावादी दृष्टि है। उनकी रचनात्मक कैनवास व्यापक है। उनकी कहानियाँ भूगोल की किसी शहर प्रांत या देशों की सरहतों में कैद नहीं हैं। नासिराजी हमेशा मानव मात्र के लिए लिखती है। उनके लिए जाति पाँतियाँ, देश-विदेश का कोई भेदभाव नहीं।

नासिराजी विगत 29 वर्षो से निरंतर साहित्य के क्षेत्र में लेखनी चला रही है। उन्होंने अपनी साहित्यिक यात्रा में कहानी और उपन्यास के अलावा अनुवाद, समीक्षा, वैचारिक लेखक आदि अन्य साहित्यिक विधाओं में भी सफल लेखन किया है। वे एक कुशल संपादक है साथ ही साथ उन्होंने निर्भिक पत्रकार के रूप में भी अपना पहचान बनाई। उन्होंने दूरदर्शन के लिए सीरियल तथा टलीफिल्मों का भी निर्माण किया था। नासिराजी ने अपनी कहानियों में इनसानी पीडाओं के अहसास को जीवन्त अभिव्यक्ति प्रदान करती है। वे जीवन के विविध कार्य एवं अनुभव क्षेत्रों से विषय आर्जित करके निपुणता के साथ रचना प्रस्तुत करती हैं।

2.3 जन्म

नासिरा शर्मा का जन्म 22 आगस्त 1948 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जिल्ले के एक संपन्न मुस्लिम सिया परिवार में हुआ। उनका नाम नासिरा अली है। शादी के बाद पति रामचन्द्र शर्मा के नाम को शर्मा साथ लगाकर नासिरा शर्मा बनाया गया।

2.4 माँ-बाप

नासिराजी के पिता प्रोफसर जमीर अली उर्दु के जानेमाने विद्वान होने के साथ-साथ प्रगतिशील विचारोंवाले अच्छे कवि भी थे। माँ का नाम नाझनीन बेगम है। माँ केवल गृहकार्य संभालती रही। नासिराजी की छोटी उम्र में ही पिता का देहांत हो गया। अपने बंधुजनों से ही पिता का जिक्र सुना है। इसलिए वे कहती है - "जब मैं छोटी थी तब उनकी मृत्यु हुई, मगर उनकी चर्चा हमेशा रही। उनके उसूल, पसंद, व्यवहार, सोच पर इतने लोग बातें करते थे कि अनजाने की हम इन सारी बातों पर चलने और मनाने लगे।"[1] जब पिता की मृत्यु हुई तब नासिराजी सात साल की थी। पिता के देहांत के बाद स्वाभिमानी एवं स्वावलंबी माँ ने दुनिया के सारे विरोध, विद्रोह और दमन को सहते हुए न केवल गृहस्थी की गाडी बखूबी चलाई बल्कि व्यवहार, बोलचाल के सलीके आदि की बुनियाद भी डाली।

2.5 पारिवारिक स्थितियाँ

व्यक्तित्व विकास का प्रथम सोपान परिवार है। परिवार के सब सदस्य से समान प्रेम प्राप्त करना सौभाग्य है। नासिराजी ऐसी ही सद्‌भागी बेटी रही। उन्हें अपने परिवार के सदस्यों को समान लाड प्यार और वात्सल्य मिले। नासिराजी के दो भाई और

---

1. व्यक्ति परिचय एवं साहित्य सृजन - डॉ. विजयकुमार रावथ

दो बहनें हैं। बडे भाई सय्यद मुहम्मद हैदर अग्रज़ी साहित्य का अध्यापन कार्य करते हैं दूसरा भाई सय्यद मजहर हैदर पत्रकार है। दोनों बहनें साहित्य सृजन में रुचि रखती है। उनके परिवार का वातावरण साहित्य सृजन के लिए अच्छा था। इस संबन्ध में उनका कथन उल्लेखनीय है - "घर का माहौल साहित्य के लिए अच्छा था। मेरे परिवार की हर पीढी में कवि थे। मेरे दादा, ताया, पिता सब साहित्य में रुचि रखते थे। मुझे प्रेरणा वास्तव में इन्सानी जिन्दगी के उतार चढ़ाव से मिली। उसमें परिवार का बडा सहयोग रहा है, और बहुत तो इसी माहौल में हुए।"[1]

नासिराजी को लेखकीय विरासत धरोहर के रूप में मिला। उन्होंने अपने खानदान के बारे में लिखती है - "मेरा परिवार केवल पढा लिखा नहीं था, बल्कि शायरों का एक सिलसिला रखता था। घर में मर्दों के लिखे कसीदे, परिंदे, नौहे और गजलें औरतों द्वारा पढी और सराही जाती थी।"[2] बचपन से ही नासिराजी के मन में साहित्य रचना करने की उत्कट वांछा होती थी। उनका बचपन इलाहाबाद में गुज़ारा था। लेकिन किशोर अवस्था कुछ कष्टदायक थी, क्योंकि उस समय पिता की मृत्यु हो गयी। उनके लिए माँ ही सर्वस्व थी। माँ के प्यार ने मानवीय संवेदनाओं से उन्हें परिचय कराने का सफल काम किया।

साधारणतया मुस्लिम परिवारों में अन्य धर्म की अपेक्षा मर्द-औरत में स्थिति में बहुत फर्क था। लेकिन नासिराजी के खानदान में उतना फर्क नहीं था। उसके बारे में उन्होंने लिखा है - "मर्द और औरत की स्थिति में ज़मीन आसमान का फर्क नहीं था। औरत की इज्जत करना और उनसे मोहब्बत करना मर्दों का फर्ज था। उसी सम्मानवीय वातावरण में पले बढे होने के कारण उनके व्यवहार और चरित्र में भी दृढ़ आत्मविश्वास

---

1. औरत के हक में - तसलीमा नसरीन - पृ. 70
2. व्यक्ति परिचय एवं साहित्य सृजन - नासिरा शर्मा - पृ. 12

कायम रहता है।"[1] साहित्य सृजन नासिराजी के लिए बहुत सुखदायक है। दुनिया की हर चीज़ों के प्रति उनके मन में उदारता की भावना है। वही उनके साहित्य सृजन का मूल आधार है।

2.5.1 बचपन

नासिरा के परिवार में कुल मिलाकर पाँच बच्चे हैं। नासिरा सबसे छोटी थी। इसलिए उनका बचपन बहुत लाड-प्यार में बीता। सात साल की अवस्था में उनकी पिता की मृत्यु हुई। फिर से उनकी माँ ने बच्चों को पिता की कमी कभी महसूस नहीं होने दी। नासिरा के साहित्य कर्म की शुरुआत तीसरी कक्षा में हुई। इन दिनों में उन्होंने पहली बार कहानी प्रतियोगिता में भाग लिया। जब वे सातवीं कक्षा में पढती थी, तब उनकी कहानी 'राजा मैया' बाल पत्रिका में छपकर आयी। इसप्रकार उन्होंने साहित्य क्षेत्र मं अपना कदम दृढ़ रखा और कॉलेज के जमाने में लिखने का सिलसिला चलता ही रहा।उन दिनों कई पुरस्कार भी उन्हें मिले। सही पैमाने में पूरी अर्थवता के साथ उनके द्वारा रचित कहानी है 'बूतखाना' जो सरिका पत्रिका में सन् 1975 को छपी थी। जिन्दगी के सबसे सुनहरे दिन बचपन के हैं। अपने बचपन के बारे में उनकी स्वीकारोक्ति है कि "बचपन का घर, भाई-बहनों का साथ, जवान-माँ बाप का छवि कभी नहीं मिटती। इस दुनिया की कल्चर में जो बचता है तो वही बचपन तथा बचपन का घर है।"[2] नासिराजी बचपन से ही एक हिम्मतवाली लड़की है। जो कुछ लिखना चाहती है वह लिखती है। लेकिन दूसरों को अपमान करके उन्हें उल्लू न बनाती थी। किसी से भी सच्ची खरी बात कहने की हिम्मत थी। मगर किसी के सच को बताकर उसे अपमानित कर या चनबाज़ी से अपना उल्लू सीधा करने की चार सौ बीसवाली कला उन्हें नहीं आती थी।

---

1. व्यक्ति परिचय एवं साहित्य सृजन : नासिरा शर्मा - डॉ. विजयकुमार रावथ
2. व्यक्ति परिचय एवं साहित्य सृजन : नासिरा शर्मा - डॉ. विजयकुमार रावथ - पृ. 12

2.5.2 शिक्षा-दीक्षा

नासिराजी की शिक्षा-दीक्षा की नीव तो परिवार में ही प्रतिष्ठित है। इनके परिवार में पढे-लिखे लोगों की कमी नहीं थी। उनकी शिक्षा का श्रिगणेश घर में ही हुआ। माँ ही उनकी प्रथम गुरु थी। इलहाबाद के कॉनवेंट में उनकी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा हुई। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सन् 1967 में उन्होंने अपनी बी.ए. की उपाधि प्राप्त की। हिन्दी, उर्दु, फारसी और पश्तो भाषा पर गहरी पकड होने के कारण ईरान उनके साहित्य शोध का विषय रहा है। ईरान को केन्द्र बनाकर उन्होंने एक उपन्यास भी लिखा है। नौकरी पाने या आजीविका चलाने के वास्ते नासिराजी शिक्षा को न देखती थी। शिक्षा के क्षेत्र में नासिराजी का बहुत आत्मीय संबन्ध उस्ताद खुसरु कसरवी से रहा। उनसे नासिराजी फारसी का प्राइवट ट्यूशन लेती थी। उन्होंने लेखिका को केवल फारसी भाषा का ज्ञान ही नहीं दिया बल्कि जीवन मूल्यों में गहरी नैतिक दृष्टि का सदा समर्थन देकर व्यवहारिक जीवन का अर्थ समझाया। उन्होंने सिखाया था कि कोई कुछ बुरा कर रहा है तो उनको अनसुना कर दे। यदि बहरा बनना मुश्किल न हो तो बेहतर है, उस नामानुकूल बात से सकारात्मक पहलू निकलना। उस्ताद की बातों ने नासिराजी को जिन्दगी के मुसीबत भरे अवसरों पर भी बहुत शक्ति दी।

2.5.3 नौकरी

श्रीमती नासिराजी ने अपनी शिक्षा पूरी होने के बाद सन् 1980 से 1983 तक दिल्ली में जमिया मिलिया विश्वविद्यालय में फारसी और उर्दु भाषा पर अध्यापन का कुशल कार्य किया। लेकिन बाहरी देश जाने में होनेवाली कठिनाइयों के कारण उन्होंने अध्यापन कार्य बीच में छोड दिया। आगे कई माह तक रेडियो स्टेशन पर प्रोग्राम ऑफिसर के रूप में सेवारत थी। उन्हें नौकरी की कोई कमी न थी। उल्लेखनीय बात यह है कि एक के बाद एक होकर कई नौकरियाँ मिलने पर भी उन्होंने सुअवसर सहर्ष

अस्विकार किया। कारण यह है कि नौकरी की वजह से उनकी स्वतंत्र साहित्य सर्जना और पत्रकारिता के कार्य में कोई न कोई बाधा अवश्यक उपस्थित हो जाएगी। वे अपनी साहित्य सृजन में तब से आज तक एक ही सुर में कार्यशील दिखाई पड़ती है।

2.5.4 विवाह

उन्नीसवीं वर्ष की आयु में ब्राह्मण परिवार के डॉ. रामचन्द्र शर्मा के साथ स्पेशल मेरेज आक्ट के अनुसार नासिराजी का विवाह हुआ। अन्तर्धर्मीय विवाह होने के कारण परिवार के जन उनमें सम्मिलित न हुए। विवाह के तुरंत बाद पति-पत्नी दोनों इंग्लेंड चले गए। वहाँ तीन वर्ष रहे। उस समय अंजु और अनिल नामक दो बच्चों को जन्म दिया। आगे चलकर अंजु का विवाह बदी अज्जमा के साथ हुआ। बेटा अनिलशर्मा भारत के बाहर काम करते हैं।

नासिराजी के पति डॉ. रामचन्द्र शर्मा का बचपन अजमेर में था। वे एक सरल स्वभाववाले व्यक्ति थे। डॉ. रामचन्द्र शर्मा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के भूगोल के अध्यापक थे। वास्तव में भूगोल में एम.ए करने के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय में कुछ साल अध्यापक कार्य करने के बाद शर्मा ने नेहरु विश्वविद्यालय में भूगोल विभाग में अध्यापक कार्य किया। फिर उन्होंने स्कोटलैंड और नागालैंट में विज़िटिंग प्रोफसर के रूप में काम किया और नागालैंड में भूगोल विभाग की नींव भी डाली। 13 नवंबर 2009 को रामचंद्र शर्मा का निधन हुआ।

नासिराजी यही विश्वास रखती है कि शर्माजी से शादी न करती तो आधा हिन्दुस्तान ही नहीं देख पाती। यह सच है कि नासिराजी जैसी एक कुशल लेखिका के पीछे रामचन्द्र शर्मा जैसे एक सहृदय पति का हाथ था। उनकी प्रेरणा नहीं है तो एक ऐसी लेखिका का उदय भी संभव नहीं था। एक लेखिका के अपने प्रोफेशन में कितनी आज़ादी अवश्य थी, रामचंद्र शर्मा ने वह आज़ादी उन्हें दी थी। विवाह बन्धन जीवन भर का रिश्ता

होता है। नासिराजी यही विश्वास रखती थी कि विवाह बन्धन में छल, कपट, झूठ आदि का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। उसका आधार सच्चाई ही है। प्रेम, विश्वास, स्वतंत्रता का भाव, विनम्रता आदि विवाह की सफलता के लिए अवश्यक है। घर हमेशा मोहब्बत से बनाना चाहिए। धार्मिक कट्टरता से दूर एक आनंदमय वैवाहिक जीवन नासिराजी को मिला जिसका पूर्ण श्रेय उनके पति को ही है।

2.6 नासिराजी का व्यक्तित्व

व्यक्तित्व एक व्यक्ति को पूर्ण रूप से नापने का मान दण्ड ही है। इसमें दूसरों को प्रभावित करने की शक्ति छिपी रहती है। जीवन की शैली में कुछ बातें हमें जन्मजात रूप में प्राप्त है, कुछ तो हम समाज व आसपास के वातावरण से ग्रहण करते हैं। ये सब मिलकर व्यक्तित्व को रूप या भाव देते हैं। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जी डब्ल्यू आलपोट ने व्यक्तित्व की परिभाषा इस प्रकार दी है - "व्यक्तित्व व्यक्ति के अन्तर्गत स्थिति मनोवैज्ञानिक एवं भौतिक व्यवस्थाओं के गतिशील संगठन है,जिनके द्वारा व्यक्ति का अपने वातावरण के साथ अनुपम समन्वयता निर्धारित होती है। एक व्यक्ति के व्यक्तित्व के आन्तरिक और बाह्य दोनों तत्वों का विश्लेषण करने से ही उसका पूर्ण रूप से हम समझा सकते हैं। साहित्यकार के व्यक्तित्व का संपूर्ण प्रभाव उसके साहित्य पर पडता है।"[1]

श्रीमती नासिरा शर्मा ने अपने बाह्य एवं आंतरिक व्यक्तित्व द्वारा दूसरों को प्रभावित करती ही रहती है। उनके कृतित्व को परखने के पहले उनके बहु आयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालना पडता है। इस संबन्ध में विजयकुमार रावथ का कथन है कि - "एक स्थान में व्यक्ति सबसे पृथक होकर अपने व्यक्तित्व की रक्षा के लिए सचेष्ट रहता है और दूसरे स्थान में परिवार, समाज जाति और राष्ट्र में सम्मिलित होकर सभी के साथ

---

1. नारी भीतर और बाहर - कमला चौधरी - पृ. 15

वह ऐसा संबद्ध हो जाता है कि किसी भी स्थिति में वह अपने को सबसे पृथक नहीं कर सकता।"[1] यही नासिराजी का व्यक्तित्व है।

2.6.1 नासिरा शर्मा का बहिरंग व्यक्तित्व

नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व में एक खूबी है, एक ताज़गी है, जो हमको जिन्दगी की लडाई के लिए हरदम तैयार और ताज़ा कर सकती है। गोरा गुलाबी आभा के लिए दमकता रंग, नीली भूरी चमकती आँखें, उभर गाल गुलाबी रंग तलिए अधरों पर हल्का स्मित, लंबे सीधे खुले बाल। कानों में अच्छे रंग के कीमती नंगेवाले खुबसूरत कर्णफूल, ऊँचे पहनाव और सुदृढ़ शरीरवाली नासिराजी का व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक है। वे स्वयं अपने चहरे के बारे में लिखती हैं कि - "मेरा चेहरा शायद अन्तरराष्ट्रिय है, ठीक मेरी सोच की तरह क्योंकि मुझे कोई इटेलियन या फिर पठान तो कोई पंजाबी या फिर काश्मीरी कहता है। मैं अक्सर शुक्र अदा करती हूँ कि मेरी शक्ल इन्सानों से मिलती है, वरना अक्सर चेहरा जानवरों से मिलने लगते हैं खुँखार और संवेदना रहित।"[1] उनके अन्दर में छिपी इन्सानियत ही, चेहरे में प्रतिबिंबित है। फिर पेशक के बारे में कहे तो साड़ी में नासिराजी अधिक सुंदर लगती है। चूडियाँ पहनना, सिंदूर लगाना जैसे बाहरी श्रृंगार पर उन्हें रुचि नहीं है। उनके विचारों में ये सब कपट धार्मिकता की बाहरी चीजें है। नासिराजी की स्वभाव से सरमी सरल और सादगी भरी है। वे निडर है और उनकी कथनी और करनी में आकाश पाताल का अन्तर नहीं बल्कि एकरूपता है।

2.6.2 धर्मबोध

नासिरा का धार्मिक दृष्टिकोण इन्सानियत पर स्थिर है। उनमें हर धर्म के प्रति एक विशाल दृष्टिकोण है। वे धार्मिक कर्मकांडों के विरोधी रही है। वे किसी भी धर्म को

---

1. व्यक्तित्व परिचय एवं साहित्य सृजन - विजयकुमार रावथ - पृ. 15

बुरा न मानती है और किसी का अपमान भी न करती है। वे धर्म-धर्म में भेद न मानती है। जन्म से मुसलमानी धर्म का परिचय उन्हें बहुत अधिक मिला। बाहर यात्रा आदि के दौरान अन्य धर्मों से भी उनका परिचय हो गए। सारे धर्मों के संबन्ध में उनका विश्वास महात्मा गाँधी के विश्वास के समान है। जो दूसरों की पीडा समझ लेते हैं, वे ही सन् धर्म हैं। नासिराजी का धार्मिक दृष्टिकोण अहिंसा का द्योतक है। वे हिन्दुओं की बुराई न सह सकती है, न, मुसलमानों का मज़ाक उडाना देख सकती है। वे सभी धर्म के पवित्र स्थल पर गयी भी है। इस संबन्ध में उनका दृष्टिकोण भी अजीब इतफाक है कि धर्म-बंधन के प्रति उनका दृष्टिकोण विशाल, मानवी, सटीक एवं सरल है जो समकालीन समाज की माँग है।

2.7 रचनाओं का उद्देश्य

नासिराजी पच्चास सालों से चारों ओर दिखायी पडनेवाली समस्याओं तथा सारी अनुभूतियों को समेटकर लिखनेवाली सतर्क लेखिका रही है। उनके साहित्य में रस रंग, रोमानी आद्रता, सौंदर्य के विविध आयाम चिन्तन और विचार खण्डित व्यक्तित्व दुःख सुख आदि के साथ पात्रों की अंतरंग और बहिरंग छवियाँ कोई धरातल जीवन हो उठती है। इनसानों को इनसान बने रहने पर प्रेरित करते रहना एवं अपमान, शोषण, अत्याचार के विरोध में खडे होने की प्रेरणा देना नासिराजी की रचनाओं का प्रमुख उद्देश्य है। पुस्तकों की बिक्री बढाने तथा पैसों के लिए लिखना उन्हें मंजूर नहीं था। यौन संबन्धों के बारे में लिखकर पाठकों को आकर्षित करना उनका लक्ष्य नहीं था। स्त्रीवाद को सिर्फ फैशन के तैर पर नहीं स्वीकार करती है। नारी लेखिका होने पर भी अपने को स्त्रीवादी कहना वे न चाहती हैं। इस संबन्ध में उनका कथन है कि - "सिर्फ स्त्रियाँ ही तो शोषित नहीं है, पुरुष भी शिकार होते ही है समाज व्यवस्था के। अपनी मर्जी से सबकुछ तो वो भी नहीं कर सकते। वे बेचारे तो अच्छी स्त्री को सपोर्ट करने के लिए भी लाछित

किए जाने को मजबूर है।"[1] नासिराजी ने सबके प्रति न्याय दिखाया तथा अपने जीवन मात्र नहीं, बाहर सब की ओर भी आँख फाडकर देखती रही। उनके प्रति अपनी तूलिका भी चलायी।

2.8 नासिराजी का स्त्री स्वतंत्रता बोध

नासिराजी के व्यक्तित्व और कृतित्व में नारी स्वतंत्रता का बोध भरा हुआ है। नासिराजी कभी भी नारिवादी नहीं है, लेकिन नारी की समस्याओं से वे दूर नहीं रहती। उनकी कथाओं के स्त्रीपात्र भारतीय समाज की परंपरा को माननेवाले है, पर अन्याय के विरुद्ध आक्रोश भी भरनेवाली है। एक सुशिक्षित महिला होने के कारण नासिराजी ने रूढियों में अवरुद्ध स्त्री के वहाँ से बचाने की कोशिश अपने रचनाओं द्वार की। अधिक विस्तार से कहे तो, उनके मन में जागृह नारी का बोध उनके साहित्य सृजन के लिए प्रेरक वस्तु रही। उन्होंने हमेशा यही विचार रखा कि स्त्री खुद जागे अपनी ताकत को पहचाने, उसे किसी बैसाखी का सहारा लेने की जरूरत नहीं है।

2.9 विदेश यात्राएँ

युनाईटेड किंगडम	1967-1970, 1983
ईरान में	1973-1980
ईराक में	1982-1986
फ्रान्स	1983
जपान	1988
थायलण्ड	1988
हाँगकाँग	1988
अफगानिस्तान	1987
पाकिस्तान	1988
नेपाल	1994

1. औरत के लिए औरत - नासिरा शर्मा - पृ. 194

नासिराजी ने नेपाल, जापान, हांगकांग, बैकाक जैसे अनेक देशों में यात्रा की। हर यात्रा में उनके अनुभव का स्तर कुछ बढा और विचारों को नवीन व ताज़ा बनाया उन्होंने इरान, इराक, अफगानिस्तान आदि विदेशी राज्यों में रहकर वहाँ के संस्कारों को बेखूबी पहचाना। उन्होंने अपनी रचनाओं में अपनी इन विदेशी यात्राओं के दौरान मिले समस्याओं की चर्चा की है।

2.10 पुरस्कार एवं सम्मान

पुरस्कार का नाम	देनेवाली संस्थान का नाम
1. अपर्ण पुरस्कार	हिन्दी अकादमी दिल्ली
2. गजानन माधव मुक्तिबोध सम्मान	भोपाल 1995
3. महादेवी वर्मा सम्मान	पटना भआषा परिषद 1997
4. कीर्ति सम्मान	हिन्दी अकादमी
5. वागदेवी पुरस्कार	लेखिका सघ जयपुर
6. पत्रकार श्री	प्रताप गढ (उत्तर प्रदेश)
7. आर्य स्मृति साहित्य सम्मान	दस प्रतिनिधि कहानियाँ को
8. नयी धारा रचना सम्मान	इंडो रशियन लिटरेसी क्लब
9. महात्मा गाँधी सम्मान	उत्तर प्रदेश 2013
10. अंतरराष्टरीय इंदुशर्मा कथा सम्मान	दिल्ली 2008, (कुईयाँजान उपन्यास के लिए)
11. संपदन कथा शिखर सम्मान	उर्दु अकेडमी पाटना 2013
12. राही मासूम राजाकथा क्रम सम्मान	लखनू 2014
13. साहित्य अकादमी पुरस्कार	भारत सरकार 2016

2.11 नासिरा शर्मा का कृतित्व

नासिरा शर्मा वर्षों से परिचय ऐशियाई में समाज की समस्याओं व आम इनसानों के दुःख दर्द पर लगातर लिखती आयी है। नासिराजी के साहित्य सृजन में कहानी, उपन्यास, नाटक, संस्मरण, टिप्पणियाँ, पत्रकारिता, वैचारिक लेख बाल साहित्य आदि मिलता है। नासिराजी के साहित्य में गंगा-जमुना संस्कृति का अद्‌भुत संगम है। जितनी जीवन्तता उनके हिन्दु पात्र परिवेश और संस्कृति में है उतनी ही उनके मुस्लिम पात्र, परिवेश और संस्कृति में है। अब तक उनके सात उपन्यास, दस कहानी संग्रह, सामाजिक मामलों पर कई वैचारिक पुस्तकें, ईरान, इराक पर उनके विशेष अध्ययन और उर्दु, फारसी के कई ग्रंथ और उनके हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने अपने साहित्य सृजन के माध्यम से स्वतंत्रता, समानता, सामाजिक मूल्यों की सुरक्षा कट्‌टर पंथी, शक्तियों द्वारा पीडित आमलोगों विशेषकर नारियों के प्रति गहरी संवेदना और सहानुभूति की अभिव्यक्ति की है।

2.12 नासिरा शर्मा की कहानियाँ

नासिरा शर्मा का साहित्य जगत का प्रवेश मूलतः कहानी के माध्यम से हुआ। उनके अब तक के दस कहानी संग्रह प्रकाशित हुए है। वे हैं - 'पत्थरगली' (1986), 'संगसागर' (1993), 'इब्नेमरियम' (1994), 'शामी कागज़' (1997), 'सबीना के चालिस चोर' (1997), 'खुदा की वापसी' (1998), 'इन्सानी नस्ल' (2001), 'दूसरा ताजमहल' (2002), 'बूतखाना' (2002), 'गूँगा आसमान' आदि। उनकी अधिकतर कहानियाँ मुस्लिम जीवन के परिवेश में लिखी गयी हैं। ये मुस्लिम समाज का दर्पण ही है। उनकी कहानियाँ मध्यवर्ग की नारी की कहानियाँ है। उनके नारी पात्र त्रासदी एवं मनोवृत्तियों व मानसिकताओं के बीच उभरे हैं। उनकी कहानी की पृष्ठभूमि में स्त्री की केवल न छाया रही बल्कि उनके लेखन में मुस्लिम नारी एक प्रतिबिंब के रूप में नज़र

आती है। कहानियों में घटनाओं को साथ लेकर पात्रों के भीतरी और बाहरी जीवन दर्शाती हुई जीवन के विभिन्न पहलुओं को नासिराजी उजागर करती है।

2.12.1 पत्थरगली

सन् 1986 को प्रकाशित नासिरा शर्मा का पहला कहानी संग्रह है पत्थरगली। इस संग्रह में - बावली, सरहद के इस पार बन्द दरवाज़ा, कातिब, ताबूत, कच्ची दीवारें, पत्थरगली, सिक्का ये आठ कहानियाँ सम्मिलित हैं। इस संग्रह में संकलित सारी कहानियाँ नारी अस्मिता, उसके जीवन बिंब, रिश्तों के बेबसी संबन्धों का स्थायित्व, स्वार्थपरता, बाजार के उतार चढ़ाव की जिन्दगी, अस्मिता का अभाव, उदासियों का अंधेरापन आदि का स्पर्श करती हैं। इस संग्रह में चित्रित कहानियाँ इस धरती पर बसे किसी भी इन्सान की हो सकती हैं, क्योंकि यह दर्द सर्वव्यापी है। नासिराजी का कहना है कि - "मेरी ये कहानियाँ महाजरत के दुःख और मुजरों के सुख को मोहभंग करती हुई एक ऐसी गली की सैर कराती है जो पत्थरगली है। इस पत्थरगली के रहनेवाले अपने निकास के लिए वह जद्दोजहद के समुन्दर में गोते लगाते हैं, रूढ़िवादिता की बेजियों को तोडकर खुले आसमान पर उडना चाहते हैं, पंखों को पसार कर उसमें सूरज की गर्मी और रोश्नी भरने केलिए तडपते हैं और इस कशमकश में पत्थर से टकराकर लहूलुहान हो उठते हैं।"[1] इसमें संग्रहित कहानियों में मानवीय त्रासदी स्पष्ट रूप में है तथा गरीबऔर शोषित मुस्लिम परिवारों का मर्मस्पर्शी चित्र है।

2.12.2 संगसागर

सन् 1993 में प्रकाशित कहानी संग्रह है संगसागर। यह नासिराजी का दूसरा कहानी संग्रह है, और उसमें तो उन्नीस कहानियाँ संग्रहित हैं। वे इस प्रकार हैं - तारीखी

---

1. पत्थरगली - नासिराशर्मा (अवतरण पृष्ठ)

सनद, पहलीरात, दरवाज़ा ए कजविन, दीवार दर दीवार, गुंचा दहन, दिल की किताब, यहूदी सरगर्दन, ज़रा सी बात, उडान की शर्त, भूख, खालिश झूठा पर्वत, संगसागर, नमक का घर, अजनबी शहर, गुँग आसमान लबादा, आखिरी पहर और तुम्हारे बिना। इन कहानियों में तत्कालीन ईरान की ज्वलन्त समस्यायें चित्रित हैं। संगसागर की सभी कहानियाँ ईरान की स्थिति का दस्तावेज है। ये कहानियाँ 1980 और 1992 के बीच लिखी गयी थी। इस कहानी संग्रह की सभी कहानियाँ नारी प्रधान है। नारियों पर होनेवाले अत्याचार, लडकियों द्वारा ससुराल में झेली कष्टतायें और राजनीतिक समस्यायें इसमें मौजूद है। नासिराजी कहती है "कहानियाँ ईरान की उन सारी जगहों को जहाँ इंसानी खून की बूंदें धरती की प्यास बनकर उमर ख्याम की रूबाइयों के दर्शन में ढली कि यह मिट्टी बुजुर्गों के वजूद के अंश से लबरेज़ हमसे हर शै में हमकलाम होती है। खामोश संवाद का एक न समाज होनेवाला सिलसिला बनाती है। वहीं पर एक जिम्मेदारी का एहसास भी उस धरती पर साँस लेनेवाले जिन्दा लोगों के सामने रखती है कि क्या इंसानों के बीच संवाद करने का सेतु राजनीति है।"[1] ईरानी क्रांतिकाल पर आधारित ये कहानियाँ मानवीय संघर्ष के सफर में 'मील का पत्थर' साबित होती हैं। विदेशी सरोकारोंवाली इन कहानियों के पीछे लेखिका की तमाम संवेदनायें हैं जो देश, काल के दायरे को तोडता हुआ आम जनता से जोडता है।

2.12.3 इब्नेमरियम

'इब्नेमरियम' नासिरा शर्मा की तेरह कहानियों का संग्रह है जो 1994 में प्रकाशित हुआ है। वे हैं - अमोख्ता, जडें, जुलजुता, जैतून के साये, काला सूरज, कागज़ी बादाम, तीसरा मोर्चा, मोमजामा, मिस्टर बाउनी, काशीदाकारी, जहांनुमा, पुल-ए-सारात

---

1. नासिरा शर्मा विशेषांक - डॉ. फिरोज़ अहमद - पृ. 160

और इब्ने मरियम। 'इब्ने मरियम' की कहानियाँ अनेक देशों की पृष्ठभूमि पर लिखी गयी है। इसमें फिलिस्तीन, युगांडा, काश्मीर, इथोपिया, इराक, टर्की आदि देशों के आतंकवाद से लेकर भारत के भोपाल गैस दुर्घटना से पीडित आम जनता की दयनीय स्थिति आदि का चित्रण हुआ है। इस कहानी संग्रह में फँसा इनसान जीने के लिए छटपटाता है। कभी उसका संघर्ष अपने अधिकार को पाने के लिए होता है। ये कहानियाँ एक दूसरे के बहुत निकट और अलग भी लगती है। यह तो सचमुच इंसानी, संघर्ष की दस्तान है। दुःख आदमी के बीच जाने और धर्म का भेद मिटा देता है। भोपाल गैस त्रासदी में तबाह हुए लोगों का हृदय विदारक चित्र इस कहानी के द्वारा लेखिका ने किया। तबाही ऐसा थी कि कुछ लोगों की मानसिक स्थिति बिगड गई, शेष बचे अपने इस हालत को देखकर तिल-तिल मरते हैं। इस कहानी संकलन में नासिराजी हर देश की अपनी स्थिति के बीच की मानवीय संवेदना को पकडने की कोशिश करती है।

2.12.4 शामी कागज़

सन् 1997में प्रकाशित नासिरा शर्मा का चौथा कहानी संग्रह है शामी कागज। इसमें सोलह कहानियाँ है। वे है - खुशबू का रंग, मिस्त्र की मम्मी, शामी कागज़, दादगाह, दीमक, पतझड का फूल, परिंदें, आईना, आश्याना, आबे-तौबे, सहरा नवरद, तलाश, उकाब, मिट्टी का सफर, मुट्ठी भर धूप, बेगाना ताज़िर। वे इन्सानी भावनाओं का प्रतीक बनकर हर देश, भाषा, प्रेम और संस्कृति का प्रतिनिधित्व ही करती हैं। इनकी सारी कहानियाँ ईरानी परिवेश में लिखी गयी है। वहाँ के लोगों का दुःख दर्द पर आधारित ये कहानियाँ यथार्थपरक मानवीय जीवन की संपूर्ण गरिमा से आशा-निराशा के संघर्षमय सफर की कहानियाँ हैं। इस कहानी में यही प्रभावित होता है कि इन्सान में इन्सानियत का होना एक ऐसी संपृक्त सच्चाई है जिसके बिना जिन्दगी नहीं चलती। रचनाकार ने यथार्थ को बहुत खूब चित्रण किया है। इंसानी मन में असंपृक्त जटिलताओं उलझनों, द्वन्द्वों को

आत्मसात करके भौतिकवादी दर्द के धूल चटा दी है, तभी ऐसी धारदार किरदारों को वह उभार सकी है। शामी कागज़ एक ऐसा दर्पण है जो ईरानी रंग से सराबोर होने के बावजूद इनसानी भावनाओं का प्रतीक है और तीन वर्षों के अन्तराल में लिखी ये कहानियाँ ईरान के उस दौर की साक्षी है जब हज़ारों जिज्ञासाओं से भरे इरान में लेखिका ने कदम रखा।

2.12.5 सबीना के चालीस चोर

सन् 1997 में प्रकाशित 'सबीना के चालीस चोर' नासिरा शर्मा का पाँचवाँ कहानी संग्रह है। इसमें कुल बारह कहानियाँ संग्रहित है - विरासत, चाँद तारों की शतरंज, इमाम साहब, ततइया, गूँगी गवाही, सतधरवा, उसका बेटा, तक्षशिला, चिमगादडे, नौ-तपा, सबीना के चालिस चोर, आया बसंत सखी आदि। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जो परिवर्तन भारत में आया उससे प्रेरित होकर लिखा यह कहानी संग्रह वास्तव में हिन्दुस्तान की सच्चा तस्वीर है। नासिराजी कहती है कि "ये कहानियाँ उन इन्सानों की है जो बचपन से मेरे साथ है। जिन्होंने मुझे कही-न-कही प्रभावित किया। अपनी जिन्दगी से मेरा रिश्ता जोडा और मुझे ताज़ा अनुभूतियों से भरी दुनिया का अलग संसार दिया। उनके परिवेश में निकली कहानियों की तरह उनके पात्रों की अभिव्यक्ति भी उन्हीं की बोली में है जो कथा में रच बस गई है, क्योंकि वह बोली कहीं मेरी भाषा भी है।"[1] हिन्दुस्तान की आज़ादी के बाद का हाल बँटवारे से शुरू होकर सत्ता के भ्रष्ट संस्थान में तब्दीली, सांस्कृतिक क्षण, ताकतों के होसला, बुलंदी से लेकर मंदिर-मस्जिद, आतंकी हमलों से लहुलुहान देश की तस्वीर आदि इस कहानी संकलन में चित्रित है। दरअसल हिन्दुस्तान की आर्थिक विडंबनाओं का असली तस्वीर नासिराजी ने इन कहानियों द्वारा दिखाया है।

---

1. नासिरा शर्मा - सबीना के चालीस चोर - पृ. 8

2.12.6 खुदा की वापसी

इस कहानी संग्रह का प्रकाशन सन् 1998 में हुआ। इसके अन्दर नौ कहानियाँ संग्रहित है। वे है - खुदा की वापसी, चार बहनें शीशामहल की, दहलीज, दिलआरा, पुराना कानून, दूसरा कबूतर बचाव, मेरा घर कहाँ, नयी हुकूमत आदि। इसकी सारी कहानियाँ मुस्लिम परिवेश के इर्द-गिर्द बुनी गयी है। मुस्लिम समाज के अन्तर्विरोधों एवं विडंबनाओं पर लिखी ये कहानी संग्रह नारी प्रधान है। मुख्यतः मध्य व निम्न मध्य वर्ग की मुस्लिम स्त्रियों की पीडा तथा उनके अनुभवों की प्रामाणिकता और मुस्लिम औरत के मनोविज्ञान को स्वगालने का कौशल नासिराजी के पास है। उनका कहना है कि - "इस्लाम ने यदि औरतों को बराबरी का अधिकार दे रखा है तो फिर वह अपने समाज, परिवार में इस तरह कैद क्यों रखी जाती है? पूरी दुनिया में अनेक औरतें अपनी-अपनी तरह से लड़ाई लड रही है। यदि औरत को अपनी लडाई खुद लडनी है तो फिर अपने लिए बनाये शरीयत कानून की पूरा ज्ञान और देश के अन्य धर्म कानूनों को भी जानना जरूरी है, तभी वह अपनी लडाई लड सकती है और एक दूसरे की मदद कर सकती है। वरना दूसरों के भरोसे नहीं तो उसको वही मिलेगा जो दूसरे उसे देश चाहेंगे।"[1] 'खुदा की वापसी' की कहानियाँ एक समुदाय विशेष की होकर भी विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करती है। इस कहानी संग्रह खुदा की वापसी के दो अर्थों में लिया जा सकता है। एक तो यहीं कि यह सोच अब जा चुकी है कि पति एक दुनियावी खुदा है और उसके आगे नतमस्तक होना पत्नी का परम धरम है। दूसरा है उस खुदा की वापसी जिसने सभी इन्सानों को बराबर माना और औरत मर्द को समान अधिकार दिये हैं। इस संग्रह की कहानियों में ऐसे सवालों के इंशारे है कि जो हमें उपलब्ध है, उसे भूलकर हम उन मुद्दों के लिए लडते हैं, जिन्हें धर्म, कानून, समाज, परिवार ने हमें नहीं दिया? हमें मिला

---

1. खुदा की वापसी - नासिरा शर्मा (अवतरण पृष्ठ)

अधिकार को हम अपनी जिन्दगी में शामिल नहीं कर पाते है और उसके बारे में लापरवाह रहते हैं। दरअसल खुदा की वापसी की सभी कहानियाँ उन बुनियादी अधिकारों की माँग करती है जो वास्तव में महिलाओं के लिए मिले हुए हैं। मगर पुरुष समाज और धर्म पण्डित मौलवी मौलिक अधिकारों को भी देने के विरुद्ध है।

2.12.7 इनसानी नस्ल

इनसानी नस्ल कहानी संग्रह का प्रकाशन सन् 2000 में हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय समाज में जो परिवर्तन घटित हुए उसमें परिवार एवं समाज के स्तर और पीढियों के स्तर पर हुए परिवर्तन इस कहानी संग्रह में है। इस कहानी संग्रह में 'असली बात, उपराधी पाँचवाँ बेटा, बडे परदे का खेल, जोडा, मरुस्थल, अग्निपरीक्षा, उजडा फकीर, दुनिया, वही पुराना झूठ, इनसानी नस्ल, एक न समाप्त होनेवाली प्रेमकथा, कनीज़ बच्चा आदि तेरह कहानियाँ संग्रहित है। इसमें जीवन की वास्तविकता का चित्रण किया गया है। इस संग्रह में दो तरह की कहानियाँ हैं - पहला इनसान से टकराहर, धर्म, भाषा, जाति-पाँत की आड लेकर जो सतही कारण है, जरूर मगर गहरे बाँधते है। दूसरी वे कहानियाँ जो संवेदना के स्तर पर एक इनसान दूसरे को छलकर सुख प्राप्त करता है और दूसरे इनसान को गहरे आहत करता है। भारतीय जन जीवन के संघर्ष और प्रेम पर आधारित ये कहानियाँ यथार्थ जीवन के सामने रखती हैं।

2.12.8 दूसरा ताजमहल

इस कहानी का प्रकाशन 2002 में हुआ। इसमें सात कहानियों का संकलन है। वे हैं - दूसरा ताजमहल, तुम डाल-डाल हम पात-पात, गोमती देखती रही, प्रोफेशनल वाइफ, पंचनगीनावाले, गली घूम पाई, संद्रकची आदि। मानव की मानव से टकराहट और ह्रास होते जा रहे मानव मूल्यों के साथ नयी और पुरानी पीढी के संघर्ष को प्रस्तुत

करती ये कहानियाँ एक अलग चेहरा लेकर आती है। इस कहानी संग्रह के बारे में नासिराजी कहती हैं - "नारी मन की अनेक परतें होती है, चाहत की, अपनत्व की, स्वीकार की और अस्विकार की। नारी विमर्श कोई प्रतियोगिता का दंगल या स्टेज नहीं है पुरुष जगत् से। वह तो यथार्थ को स्वीकार करनेवाला जीवन बोध है।"[1] इस कहानी संग्रह में समकालीन समाज की संवेदनशील नारियों के दृष्टि, तनाव, संघर्ष, त्रासदी आदि को देखने और समझने का प्रयास हुआ है।

2.12.9 बुतखाना

इसका प्रकाशन 2002 में हुआ। इसके अन्दर उनतीस कहानियाँ संकलित है। वे है - नमकदान, अपनीकोख, खिडकी, बुतखाना, गुमशुदा लड़की, ठंडाबस्ता, बिलाव, मटमैला पानी, घुटन, दूसरा चेहरा, इच्छा घर, कैदघर, फिर कभी, शर्त, गलियों के शहज़ादे, मरियम, लू का झोका, कल की तमन्ना, रुतबा, खौफ, गलत सवाल सही हल नज़रिया, आज का आदमी, निकास द्वार, पीछा, उलझन, अभ्यास, तन्हा, पनाह आदि। अन्त में मेरी रचना प्रक्रिया नामक लेख भी है। ये कहानियाँ समाज की सच्चाइयाँ है। जो यथार्थ की जमीन से उपजी है। इसमें जरूरत के अनुसार कुछ कल्पना का और उनके अहसासों का मिश्रण है। 'बुतखाना' कहानी संग्रह का महत्व इसलिए है कि इस संग्रह में उनकी पहली कहानी से लेकर पच्चीस वर्षों के लेखकीय दौर का लेखा-जोका और बानगी है। निजी अनुभूतियों के माध्यम से समाज के सरोकारों की व्यवस्था उनमें है। इस कहानी संग्रह की कहानियों को पढ़ना एक समुद्री ज़हाज़ की लंबी यात्रा करने के समान है। सभी रचनाओं में एक तत्व समान रूप से विद्यमान है कि यह जीवन की प्रतिकूलताओं के बीच उसके प्रति आस्था बनाए रखने का प्रयास करती है।

---

1. वाङ्मय - संप एक फिरोज अहमद - पृ. 215

संक्षेप में कहा जा सकता है कि नासिरा श-मा की कहानियाँ जीवन का कलात्मक बखान करती है। उनकी कहानियाँ जीवन रंग भरती है। उसे लय प्रदान करती है और जीवन को वह गाती है। उनकी कहानियों की प्रमुख विशेषता यह है कि सभी कहानियों में स्त्री-पात्रों की प्रधानता रही है। इसमें नारी के विविध रूप दिखाई देते हैं तथा उनके स्त्री पात्र अपने जीवन में आई कठिनाइयों से जूझते हुए आगे बढ़ने की कोशिश करती है। स्त्री की संवेदना पर जब वह लिखती है तो उसके अहसासों की बारीक परते, तथा उसे मुख्यधारा के स्त्रीवादी कोणों से आगे जाकर एक जिन्दा औरत और व्यवहारवादी आयाम देती है।

2.13 नासिरा शर्मा के उपन्यास

नासिरा शर्मा जी के अब तक सात उपन्यास प्रकाशित हो चुके है। वे हैं - शाल्मली (1987), सात नदियाँ एक समंदर (1985), ठीकरे की मंगनी (1989), जिन्दा मुहावरे (1992), कुइयांजान (2005), अक्षयवट (2005) जीरो रोड (2009)।

2.13.1 शाल्मली

शाल्मली के माध्यम से नासिराजी ने उपन्यास के क्षेत्र में प्रवेश किया। दाम्पत्य जीवन पर आधारित यह उनकी एक अनूठी कृति है। इसमें नासिराजी ने स्वतंत्रता के लिए झटपटाती रही, आधुनिक कामकाजी महिला का वर्णन किया है। लेखिका ने शाल्मली और नरेश के दाम्पत्य संबन्ध की कडवाहट और घुटन का, पति-पत्नी के बीच चल रहे निर्भय शीतयुद्ध का शाल्मली की ठंडी प्रतिक्रियाओं का पत्नी के परंपरागत समर्पण का अच्छा चित्रण इस उपन्यास में बडे मार्मिक ढंग से किया है। शाल्मली की नायिका एक संपूर्ण स्त्री है जो आज पच्चीस साल बाद भी पहले जैसी ताज़गी लिए हुए पठनीय बना हुआ है। नासिराजी हर हाल में विवाह और परिवार को बनाये रखने में

विश्वास रखती है, अगर एक बार ये आधार खंडित हो जाए तो नयी पीढी फैशन के नाम पर अनेक विकृतियों और असाध्य रोगों की शिकार हो जाएगी, जिसका प्रभाव समाज पर पडेगा। इसी कारण उनके नारी पात्र आधुनिक होते हुए भी उच्छृंखल है। इस उपन्यास में लेखिका के प्रगतिशील विचारों की छाप दिखाई देती है। इस 'शाल्मली' नामक उपन्यास में लेखिका यही संदेश देना चाहती है कि परिस्थितियाँ जटिल होने पर भी अपने अस्तित्व को बचाकर रखना चाहिए, क्योंकि इंसानी रिश्ते बराबरी के धरातल पर ही अपने अस्तित्व को बचाकर रखना चाहिए। क्योंकि इंसानी रिश्ते बराबरी के धरातल पर ही फलते फूलते हैं विशेषकर मर्द और औरत के। हिन्दु समाज में पत्नी पूरी तरह से पति की संपत्ति या दान की हुई वस्तु मानी जाती रही है। इस स्थिती में पुरुष की परंपरागत मानसिकता दाम्पत्य संतुलन में बाधक बन जाती है। इस कारण से पति और पत्नी दोनों का जीवन दुखद बन जाता है। शाल्मली उपन्यास के अंत में शाल्मली (नायिका) इस नतीजे पर पहुँची कि "जीवन के दस ग्यारह वर्षों के संताप को वह जीवन का महत्वपूर्ण मुद्दा बनाकर उसकी तरफ से निर्लिप्त हो जाए, जिस व्यक्ति को उसने इतना संभाल कर रखा है, अगर उसे तोड बैठेगी तो अपनी जीवन यात्रा की धारा टूटकर शाखाओं में बटने लगेगी। उसका ठोस व्यक्तित्व एक चंचल धारा टूटकर शाखाओं में बटने लगेगी। उसका ठोस व्यक्तित्व एक चंचल धारा की तरह अपना सीधा लक्ष्यपूर्ण प्रवाह खो बैठेगा"[1] पति सदियों से पत्नी को अपनी संपत्ति समझता है और अपने मर्जों के मुताबिक उसका उपयोग करता रहा है। शाल्मली इसका उत्तम उदाहरण है।

2.13.2 ठीकरे की माँगनी

यह सन् 1989 में प्रकाशित स्त्री केन्द्रित उपन्यास है। इसमें लेखिका ने स्त्री की यातना उसके जीवन की विसंगतियों विडंबनाओं पर सशक्त ढंग से विचार किया है।

---

1. शाल्मली - नासिरा शर्मा - पृ. 168

भारतीय समाज में विशेषकर मुस्लीम समाज में एक समय ऐसा था कि जन्म के पूर्व या जन्म के साथ ही बच्चों के विवाह तय कर लेते थे। बडे होने पर उनके विचार या रुचियों के बदलाव आने पर भी सामाजिक बन्धनों का पालन करने के लिए उसी विवाह करना पडता है। यह उपन्यास बाल विवाह जैसे सामाजिक समस्या की ओर भी इशारा करता है। नासिरा शर्मा ने ठीकरे की मंगनी के माध्यम से हिन्दी साहित्य को 'महरुख' जैसा अद्वितीय एवं मौलिक पात्र दिया है। मेहरुख का जीवन उन स्त्रियों के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है जो अपनी मुक्ति को अकेले में न ढूँढकर समाज के उपेक्षित, निम्नवर्गीय, संघर्षरत, शोषित पात्रों की मुक्ति के प्रश्न को व्यापक बना देती है। औरत कैसा होना चाहिए उसीकी कहानी यह उपन्यास कहता है। इस उपन्यास की नायिका मेहरुख कहती है - "एक घर अपना भी तो हो सकता है जो उसके बाप और शेहर के घर से अलग उसकी मेहनत और पहचान का।"[1] इस उपन्यास में लेखिका ने परंपरा और आधुनिकता, खानदानी रिवायतें से जुडी भारतीय समाज में स्त्री की परिवर्तित स्थिति और बहाव के नाम पर पाश्चातीकरण की अंधी दौड आदि पर अपना मंतव्य प्रकट कर अपनी अलग विचारधारा का परिचय दिया है। नासिराजी इस उपन्यास में कहती है कि - "मेरा विश्वास है कि इन्सान दो बार जन्म लेता है, पहली बार माँ की कोख से, दूसरी बार हालात की मार से। प्रत्येक व्यक्ति कुछ सोचकर एक शिक्षा की ओर कदम बढाता है, मगर हवा उसे किसी दूसरी ओर उठाकर ले जाती है। वे बनना कुछ चाहता है और बन कुछ जाता है। कुछ तो हालात के आगे सिर झुका देते हैं, कुछ अपने को मिटा देते हैं।यही जीवन का अन्तिम चौराहा नहीं है। इस लंबी जिन्दगी में बहुत सारे चौराहे आपको मिलेंगे और यह आप होंगे जो अपने रास्तों को पहचानकर अपनी मंजिल पर पहुँचेंगे।"[2] इसकी

---

1. ठीकरे की मंगनी - नासिरा शर्मा - पृ. 24
2. वही - अवतरण पृष्ठ

प्रवाहमय भाषा एवं लोक भाषा की गंधों के कारण यह उपन्यास बहुत ही आकर्षक बन गया हैं।

2.13.3 सात नदियाँ एक समन्दर

सन् 1985 में इस उपन्यास का प्रकाशन हुआ। ईरान की खूनी क्रांति पर लिखा गया यह उपन्यास बहुचर्चित है। यह एक ऐसा उपन्यास है जहाँ पर समय का बहाव और घटनाओं का कालचक्र घूमता और बहता नजर आता है। 'सात नदियाँ एक समन्दर' स्त्री प्रधान उपन्यास है। इसमें ज्यादा स्त्री पात्रों का चित्रण हुआ है। तय्यबा इस उपन्यास का प्रमुख स्त्री कथापात्र है। उसीके माध्यम से कथा का विकास होता है, तथा आरंभ से अंत तक उपन्यास की केन्द्र नायिका ही है। लेखिका चार बार ईरान जाकर और चन्द माह ईरान में रहकर इस खूनी क्रान्ति को अपनी नंगी आंखों से देखा, महसूस किया। इस खूनी रंगीनों के परवाह किए बगैर उसकी दशा उपन्यास के रूप में लिख ली। कोई भी युद्ध, या क्रांति हो उससे सबसे अधिक प्रभावित स्त्री ही होती है। स्त्री को ही सबसे अधिक पीडा यंत्रणा झेलनी पडती है। इस उपन्यास केन्द्र में एक नहीं सात स्त्रियाँ है। नदियों के जीवन का एक ही लक्ष्य बहते-बहते अन्त में समन्तर में मिट जाना है। नदी का अंत ज़रूर है लेकिन उनके पानी के भाग्य में सिर्फ बहना ही लिखा है। नासिराजी इस उपन्यास के माध्यम से ईरान के धार्मिक तनाशाही के दौर में वहाँ के आम आदमी, विशेषकर स्त्रियों की दुर्दशा का ऐसा हौफनाक चित्र खींचा है कि पढकर मस्तिष्क धर्म से तौबा उठता है। धर्म आदमी के अन्दर की चीज़ है। वह आदमी के अन्दर ही बना रहे तो बेहत्तर है। वह अगर सडको पर उतर आता है तो खुखार दरिन्दा बन जाता है। इस उपन्यास के बारे में नासिराजी लिखती है - "ईरान की क्रांति पर लिखा मेरा यह उपन्यास उन अनुभवों का लेखा-जोखा है, जो पिछले नौ वर्षों में मुझे ईरान की धरती पर मिले थे। पिछले नौ वर्षों

के पीछे लगभग नब्बे वर्षों का अतीत साँस ले रहा था। जिसमें पाँच हज़ार वर्ष पुराने ईरान की सभ्यता संस्कृति का वैभव अपनी ऐतिहासिक गाथा गुन गुन रहा था।"[1]

2.13.4 जिन्दा मुहावरे

सन् 1992 में प्रकाशित इस उपन्यास में नासिराजी भारत-पाक विभाजन के कारण अपना सारा जीवन शंकाओं और दुविधाओं में व्यतीत करनेवाली मुस्लिम पीढ़ी की भावनाओं का चित्रण करती है। इस उपन्यास का एक अध्याय भारत में है तो दूसरा पाकिस्तान में है। यह उपन्यास ज़िन्दा मुहावरे जिन्दा, जीते जागते दर्द का एक दरिया है जो बँटवारे की कोख से जन्मी एक चीख है जो ऐसी चीख किसकी अनगूंज आज भी सुनाई देती है। बँटवारे ने घर, आंगन के लोगों को बांट दिया था। माँ-बेटी से, बेटी-माँ से जुदा हो गयी थी। बहन बहन से बिछुड गयी थी, भाई भाई से कही, बहन भाई की याद में तडप रही थी, प्यार भरे दिल एक दूसरे से दूर होकर सिसक रहे थे। इस पीडा के तो वही साक्षी थे जो इसमें से गुजर रहे थे। इस उपन्यास की सबसे बडी उपलब्धि है लेखिका की साफगोई और ईमानदारी। उन्होंने पूरी तटस्था के साथ स्थितियों का विश्लेषण किया है। 'जिन्दा मुहावरे उपन्यास के जरिए नासिराजी इस सत्य की ओर संकेत करती है कि, "राजनैतिक स्वार्थी के कारण भले धरती बाँट जाए पर भी इंसानी रिश्ते नहीं बाँटते हैं। वे कहती है - "मेरी कोशिश इस उपन्यास के जरिए सिर्फ इतना है कि जिन्दा मुहावरे पाठकों को उस सेतु पर लाकर खडा कर सकूँ जो एक इंसान से दूसरे इंसान तक जाता है और जिसके नीचे मोहब्बत का सामंतर ठाठे मारता है।"[2] विभाजन जितना विनाशकारी हिन्दुओं के लिए था उससे ज्यादा विनाशकारी मुसलमानों के लिए भी था। जो मुस्लिम युवक अपने सपनों का देश पाकिस्तान चला गया तो वहाँ के मुसलमान ने कभी न हृदय

---

1. जिन्दा मुहावरे - नासिरा शर्मा - पृ. 42
2. वही - पृ. 42

से उन्हें अपनाया। उन्होंने अवधी मिश्रित खडीबोली का मिश्रण घोलकर भाषा का एक नया रूप प्रस्तुत किया है। उपमान एवं बिंबों के जरिए भाषा में जान लाने में लेखिका ने सफलता प्राप्त की है।

2.13.5 कुइयाँजान

सन् 2005 में प्रकाशित नासिराजी का उपन्यास कुइयाँजान समय के चेहरे पर लिखा गया ऐतिहासिक एवं मानवीय उपन्यास है। मानवीय अस्तित्व एवं पर्यावरण से जुडी चिन्ताओं को लेकर लिखा गया। यह उपन्यास बहुत अधिक चर्चित एवं पुरस्कृत कृति है। निःसंकोच इस उपन्यास को नासिराजी का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास घोषित किया गया है। भारत में गाँव, कस्बे, शहरों में लोग, कुआ, तलाबों और नदियों से पानी लेते हैं जो अधिकतर गंदा तथा कीटाणुयुक्त होता है। पानी के कारण राजनीतिक तनाव पनपते हैं। जैसे भारत-पाकिस्तान, भारत और बंगला देश, भारत और नेपाल स्वयं भारत में कर्नाटक और तमीलनाडु के बीच कावेरी नदी को लेकर तनाव स्थिति पनप चुकी है। नासिराजी कहती है कि - "हम अपनी नदियों को निर्मल बनाने और जल के महत्व को समझने की दिशा में जागरूकता लाने की कोशिश करे ताकि हम अपने जल को पीने को लेकर हमें गुलाम बनाने की रणनीति में सफल होंगे।"[1]

2.13.6 अक्षयवट

नासिराजी का महाकाव्यात्मक उपन्यास अक्षयवट का प्रकाशन सन् 2005 में हुआ। इस उपन्यास में नासिराजी पुराने परंपरागत इलाहाबाद को अपनी चमक दमक के साथ युग के बदलते संदर्भों से जोडकर दर्शाया है। पुराने इलाहाबाद की दयनीय स्थिति

---

1. वाङ्मय - जल की व्यथा-कथा कुइयांजान के संदर्भ में - एम. हनीफ मदार संपा. फिरोज अहमद - पृ. 159

का चित्रण उपन्यास में किया है। इलाहाबाद शहर अपने सारे नए पुराने चटक मद्धिम रंगों और आयामों के साथ जीवन्त रूप में इस उपन्यास में चित्रित है। अक्षयवट में समग्र इलाहाबाद अपनी सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनैतिक विरासत के साथ उपन्यस्त है। अक्षयवट एक सामाजिक उपन्यास है और उसका अभीष्ट भी यही है कि नैतिक एवं आदर्श सामाजिक संरचना का निर्माण की अपेक्षा की ओर संकेत करना। लेखिका ने 'अक्षयवट' में शहर के वे सभी रोग दिखाए है जो किसी भी शहर में प्रभावशाली लोगों की छत्र छाया में पलते-बढते है। राजनीतिक, व्यापार और अपराध जगत, पुलिस जनता को तरह-तरह की अपवादों और कष्टों में जीने छोड देते हैं। इस उपन्यास के माध्यम से नासिराजी इलाहाबाद के सहारे हिन्दुस्तानी शहरों की दर्दीली कहानी कही है। अक्षयवट सचमुच समाज, देश, धर्म, व्यक्ति सियासत राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय सारी इंसानी फिक्रों का समुच्चय है। अक्षयवट में महिला, पुरुष, नौजवान, बूढे, गरीब, अमीर, अधिकारी-व्यापारी, मज़बूर-कर्मचारी, दलित पीडित, अपराधी शोषक या सामान्य जन सभी अभिदर्शित है। वस्तुतः नासिराजी का महाकाव्यात्मक उपन्यास अक्षयवट भारतीय संस्कृति का कथात्मक जीवंत अभिलेख है।

2.13.7 ज़ीरो रोड

नासिराजी का नवीनतम उपन्यास ज़ीरो रोड का प्रकाशन 2009 में हुआ। इसमें निम्न मध्यवर्गीय भारतीय परिवार की कहानी का असली चित्रण है। अन्य उपन्यासों की अपेक्षा इसमें पुरुष शोषण की कथा है। यह उपन्यास कई दृष्टि से हिन्दी में लिखे गये उपन्यासों में विशिष्ट है। ज़ीरो रोड का मूल कथा इलाहाबाद तथा उसके मुहल्ले तक ज़ीरो रोड जैसी सडकी महत्वपूर्ण सडक तथा इलाहाबाद के कुछ अन्य इलाकों से जुडी हुई है। इसमें महादेश के पढे लिखे सिद्धार्थ नामक युवाओं का प्रतिनिधित्व करता है। वह मध्यवर्गीय हिन्दुस्तानी परिवार का है। सिद्धार्थ की बेरोज़गारी के माध्यम से आज के

भूमण्डलीकृत विश्व की वैश्विक स्थानीयता से लेकर देश दुनिया के साम्प्रदायिकता, आतंकवाद और इंसान की कथा नासिराजी कहती है। 'ज़ीरो रोड' नासिराजी की कलम के ज़रिए विकसित सशक्त एवं महत्वपूर्ण उपलब्धी है।

2.14 लेख संग्रह

नासिरा शर्मा बहुमुखी प्रतिभा संपन्न लेखिका है। इन्होंने कहानी, उपन्यास तक ही अपनी पहचान सीमित न रहकर आलोचना के क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया है। समाज के गूढ अंतर्विरोधों को आपने न केवल अपनी कहानियों, उपन्यासों में उकेरा बल्कि आपने साहित्येतर लेखन में भी चित्रित किया। आपके साहित्य में एक ओर जहाँ मानवीय मूल्य एवं सरोकारों की गूढ़ संरचना होती है। वहीं दूसरी ओर आमजन के पक्ष में खडा होकर आवाज़ को बल देने का सूत्र भी मौजूद है। उनके गद्य साहित्य के अंतर्गत 'राष्ट्र और मुसलमान', 'किताब के बहाने', 'औरत के लिए औरत' आदि लेख संग्रह है।

2.14.1 राष्ट्र और मुसलमान

राष्ट्र और मुसलमान 2002 में प्रकाशित नासिरा शर्मा के वैचारिक लेखों का एक मौलिक संग्रह है। इसमें 1991 से 1999 तक देश के विविध समाचार पत्रों में लेखिका ने मुसलमानों के संदर्भ में लिखे लेखों का समावेश किया गया है। नासिराजी का हिन्दी, उर्दु दोनों भाषाओं की चर्चित पुस्तक है 'राष्ट्र और मुसलमान'। धर्म, राजनीति, सांस्कृतिक समाज और साहित्य आदि विषयों पर रचित इस पुस्तक बहुत विख्यात है। इस पुस्तक में नासिरा शर्मा ने मुसलमान को अपनी खूबी और कमज़ोरियों के साथ पेश किया है। इस किताब की भूमिका में नासिराजी ने लिखा है - "एक आदमी की तरह अपनी खूबी और कमजोरी के साथ मौजूद है। वह स्वयं अपनी बात कहने में सक्ष्म है, इसलिए उनके लेखों में मुसलमान आम आदमी खूबियों से कमज़ोरियों के साथ उभरते

हैं।"[1] वे सत्य को सामने देखते हैं। उन्होंने इस पुस्तक को सिर्फ लेखों का संग्रह के रूप में प्रस्तुत किया है बल्कि साहित्यकता को भी स्थान देकर ऊपर उठा दिया है। इसमें संग्रहित लेख मुसलमानों की सच्ची तस्वीर सामने लाने में सक्ष्म बन पडे है। इसमें कुल इकतीस लेख है। इसमें उन्होंने हिन्दु मुस्लिम सांप्रदायिक सौहार्द पर बल देते हुए यह सन्देश दिया है कि मिलकर रहने से ही उन्नति, विकास और प्रगति होकर और पिछडापन और गरीबी से लडने का बल मिलेगा है। इस पुस्तक में लेखिका मुसलमानों की आज की स्थिति, दुःख, राष्ट्र के प्रति कर्तव्य निभाना,समाज में शिक्षा का प्रचार, प्रसार करना, धार्मिक कट्टरता से लोगों को बचाना आदि बातों पर खुलकर कलम चलाती है। नासिरा शर्माजी केवल एक मुस्लिम लेखिका ही नहीं एक हिन्दु लेखिका भी है। वे जितनी मुसलमान है उतनी हिन्दु भी है।

2.14.2 किताब के बहाने

सन् 2001 में प्रकाशित 'किताब के बहाने' पुस्तक हिन्दी, उर्दु, फारसी, अरबी और अंग्रेज़ी भाषा की चर्चित पुस्तकों पर लिखी समीक्षाओं का संग्रह है। विभिन्न विषयों एवं अनुशासनों पर लिखा इस संकलन में चौबीस लेख है जो पाँच भागों में बाँटा गया है। इतिहास, समाज, साहित्य, नारी और जीवनी। ये लेख सात सौ वर्ष पहले लिखी गयी पुस्तक से लेकर बीसवीं शती के अंतिम वर्ष तक लिखी कृतियों से परिचय कराते हैं। इस लेखों द्वारा न केवल उन्होंने पुस्तकों की आलोचना की है बल्कि इससे ज़िन्दगी के कुछ अहं मुद्दे और संवेदनाओं को भी उजागर किया है। इस पुस्तक में संग्रहित सभी लेख 'स्वतंत्र भारत' नामक समाचार पत्र में प्रकाशित हो चुके हैं। इस पुस्तक की सबसे बडी खूबी है कि इतने सूखे एवं गूढ विषय को उन्होंने रोज़ की जिन्दगी के करीब लाकर

---

1. नासिरा शर्मा, व्यक्ति परिचय एवं साहित्य सृजन - विजयकुमार रावथ - पृ. 43

खडा कर दिया है। संपूर्ण पुस्तक सरल एवं प्रभावी भाषा में लिखी गई है। कहीं कहीं ज़रूरत के अनुसार रेखाचित्र भी दिए है। पुस्तक बहुत ही रोचक है।

2.14.3 औरत के लिए औरत

इसमें नासिरा शर्मा के औरत संबन्धी विचार संकलित है। पुस्तक का एक-एक लेख उनके अनुभव संसार है। एक ओर वे अन्तरराष्ट्रीय मुद्दों पर कलम चलाती है तो दूसरी ओर कोरे भारतीय जीवन का चित्रण करती है। वे कहती है - "मैं स्त्रीवादी नहीं हूँ, न ही स्त्रियाँ मेरे लेखन के केन्द्र में रही है। मुझे नहीं लगता कि स्त्री की समस्याएँ उनका रूप कुछ भी हो सिर्फ स्त्री की समस्याएँ है।"[1] इस रचना में एक औरत की दृष्टि से तमाम विचार बिन्दुओं पर सोच प्रस्तुत करनेवाली वैचारिकता दृष्टिमान है। 'औरत के लिए औरत' में नासिरा शर्मा औरत के पक्ष में खडी होकर अपनी पूरी संवेदनशीलता और आत्मीय अंतरगता के साथ देश तथा विदेश तक की औरतों की समस्याओं को उभरती है। उनकी चिंता के केन्द्र में पूरी स्त्री समाज है। उनके सामने न केवल देश वरन् विश्व तक की स्त्रियों के आत्माभिमान, सम्मान, सुरक्षा अस्मिता आदि गंभीर रूप से खड़ी है। सदियों से पुरुषों की कृपा दृष्टि पर जीती औरतों के भीतर स्वयं को इनसान समझने का साहस लेखिका ने इस पुस्तक द्वारा भरी है। इसमें देश-विदेश की यात्राएँ करती नाना अनुभवों से गुज़रती लेखिका ने जीवन यथार्थ के अत्यन्त प्रामाणिक चित्र उकेरा है। औरत तो शिकार है, शोषित है, उत्पीडित है। लेखिका के लेख उनके विरुद्ध आवाज़ है जो संस्कार के कोने कोने से उठी है। इस के आधार पर वे अपने विचारों को भी इस पुस्तक द्वारा व्यक्त करती है।

---

1. औरत के लिए औरत - नासिरा शर्मा - पृ. 191

2.15 यात्रा वृत्तांत

श्रीमती नासिरा शर्मा का यात्रावृत्तांत उनके यात्रानुभव का प्रत्यक्ष प्रमाण है। सामाजिक यथार्थ के केन्द्र बनाकर समाज सुधार की ओर प्रमाण करनेवाले साहित्यकार की कल्पना को उनके यात्रानुभव चार चाँद लगते हैं। नासिराजी अनेक स्थानों की यात्रा की है। नौकरी पत्रकारिता अध्ययन और परिवार को साथ देने के लिए उन्होंने अनेक स्थानों की परिक्रमा की है। वे एक स्तरीय यात्री लेखिका भी है।

2.15.1 अफगानिस्तान : बुजकाशी का मैदान

अफगानिस्तान : बुजकशी का मैदान में नासिराजी की अफगानिस्तान यात्राओं का वर्णन है। यह पुस्तक समय और इतिहास की गलियों का सफर करती हुई पाठकों को अफगानिस्तान के उथल पुथल भरे सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवेश से परिचय कराती है। उनकी यात्रा विवरण से विभिन्न देश की रीति-रिवाज़ों की अभिव्यक्ति समग्रता में मिलती है। उनके यात्रा-विवरण बहुत अधिक रोचक एवं अनुभूतिपरक है।

2.16 बाल साहित्य

नासिरा शर्मा ने बालमनोविज्ञान को अच्छी तरह जानकर ही बालोपयोगी साहित्य की रचना की है। बालमनोविज्ञान एवं मनोरंजन के लिए नासिरा शर्मा द्वारा लिखे गये तीन लघुबाल उपन्यास है - बदलू, दिल्लू, दीमक और भूतों का मैकडोनल आदि।

2.17 अनुवाद

कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में अपना स्थान बना कर नासिरा शर्मा ने अनुवाद के क्षेत्र में भी अहं भूमिका निभाई है। उनके लेखन की विविधता उनको साहित्य क्षेत्र में अद्वितीय स्थान प्राप्त कराने में सक्षम बनाती है। उन्होंने अनेक छोटे-मोटे अनुवादों

के साथ ईरान की लोक-संस्कृति से संबन्धित लोककथाओं का अनूठा अनुवाद किया है। उनके 'किस्से जाम का' और 'प्रेमकथा' ये दो अनूदित कहानी संग्रह है।

2.17.1 किस्सा जाम का

सन् 1994 में प्रकाशित 'किस्सा जाम का' उनका पहला अनूदित कहानी संग्रह है। इसमें सत्तीस लोककथायें संग्रहित है। ये सभी कहानियाँ खुसरानी बोलियाँ है जो - फारसी से मिलती-जुलती है। ये कहानियाँ पढ़ते वक्त ज़रा भी अहसास नहीं होता कि ये अनूदित कहानी है। इस अनुवाद के बारे में नासिराजी कहते हैं कि "ईरान से लौटकर मुझे यात्रा संस्मरण लिखने से अच्छा लगा कि मैं ऐसा कुछ लिखूँ जो ईरान की आत्मा से जुडा हुआ हो। जिसमें ज़िन्दगी भी हो रोचकता भी हो और ईरान के रीति-रिवाज़ों से लिपटती हुई उसकी सांस्कृतिक काया भी हो।"[1] इस संग्रह में ईरान के जानेमाने कवि श्री मोहसिन की लोककथाओं के द्वारा वे ईरान की सभ्यता एवं संस्कृति से परिचित कराती हैं।

2.17.2 प्रेमकथा

'प्रेमकथा' सन् 2001 में प्रकाशित हुई। इसमें ईरान के प्रसिद्ध क्रांतिकारी एवं सफल साहित्यकार ससद बहिरंगी की कहानियों का हिन्दी में अनुवाद है। इसमें सोलह कहानियाँ है। फारसी भाषा में लिखी इस कहानी को नासिराजी इतनी कुशलता से अनुवाद किया है कि सभी कहानियाँ हिन्दी की ही लगती है।

2.18 संपादित ग्रंथ

कहानी, उपन्यास लेखन तथा अनुवाद के क्षेत्र में अपना स्थान बनाने वाली बहुआयामी लेखिका नासिराजी ने संपादकीय क्षेत्र से भी अछूता नहीं रहा। उन्होंने दो ग्रंथों का कुशल संपादन किया।

---

1. किस्सा जाम का - नासिरा शर्मा - पृ. 7

2.18.1 इकोज़ ऑफ ईरानियन रिवोल्यूशन : प्रोटेस्ट पोयटरी

ईरानी की संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति विशेष रुचि रखनेवाली नासिरा शर्मा इस ग्रंथ के कुशल संपादन कर ईरानी लोगों के दुःख को बाँटने का प्रयास किया। इस किताब में ईरानी लोगों के न्याय और स्वतंत्र से संबन्धित काव्य का समावेश किया गया है। इसमें कुल सत्तीस कविताओं को सम्मिलित किया है। इस किताब का संपादन करते वक्त नासिराजी ने उन कविताओं को स्थान दिया है, जिसमें ईरानी लोगों का तत्कालीन संघर्ष और उससे उत्पन्न वहाँ की परिस्थिति का चित्रण है। ये कविताएँ ईरानी लोगों के सामाजिक, राजकीय, आर्थिक और धार्मिक जीवन का प्रतिनिधित्व करने में समक्ष हैं। इस संग्रह में सम्मिलित सभी कविताओं में दिये गये संदेश सिर्फ ईरानी लोगों के लिए मात्र है बल्कि पूरी मानव जाति है। इसमें नासिराजी की चार कविताएं सम्मिलित हैं जिसमें उनके कवि हृदय का परिचय भी मिलता है। साथ ही यह ईरानी क्रांति को मानवीय धरातल पर तराशने का एक महत्वपूर्ण प्रयास भी है।

2.18.2 क्षितिज पार

नासिरा शर्मा ने 1988 में 'क्षितिज पार' के कहानी संकलन के रूप में कुशल संपादन किया। शिक्षक दिवस के उपन्यास में राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित इस संकलन में राज्य के अध्यापकों की चुनिंदा कहानियाँ है। राजस्थान के अध्यापकों के विचार और अनुभव पाठकों के सामने रखना उनका लक्ष्य था। इसमें विविध विषयों से संबन्धित कुल तीस कहानियाँ संकलित हैं। यह संकलन मरुभूमि से जुडे लेखकों की कृतियाँ हैं, जो मनस्थल को हरा-भरा, क्रियाशील तथा जीवित करने की क्षमता रखती हैं।

2.19 संपादित पत्रिका

पत्रिकाओं का संवादन भी उन्होंने किया है।

2.19.1 'सारिका' पत्रिका

वे सारिका पत्रिका द्वारा ईरानी कथा, वहाँ के लोगों के दुःख पीडा यातना तथा शोषण आदि की अभिव्यक्त करना चाहती थी। ईरान में चल रही उथल-पुथल के बारे में अनेक जिज्ञासायें भारतवासियों के मन में थीं। सारिका पत्रिका पाठकों के लिए इन सवालों का जवाब ढूँढती है। इसमें ईरानी क्रांति कथा विशेषांक चार भागों में विभाजित है। पहले भाग में ईरान के क्रांतिकारी कहानिकारों की कहानियाँ और लघुकथाएँ है। क्रांतिकारी कवियों की कविता दूसरे भाग में है। ईरान के प्रधानमंत्री और साहित्यकारों से साक्षात्कार तीसरे भाग में और अंतिम भाग में नासिरा शर्मा का ईरान का आँखों देखा हाल रिपोतार्ज के रूप में है जो निश्चय ही भारतीय पाठकों के मन में ईरान विषयक जिज्ञासा उत्पन्न कराती है।

2.19.2 'पुनश्च' पत्रिका

सारिका के सफल संपादन के बाद नासिराजी ने 'पुनश्च' नामक साहित्यिक विशेषांक का संपादन किया। यह अंक अपनी साहित्यिक परंपरा को कायम रखते हुए ईरानी क्रांति साहित्य पर केन्द्रित है। "जब विश्व के किसी भी कोने से अपने अधिकार, स्वतंत्र, अस्तित्व और अस्मिता को लेकर मनुष्य की कोई भी नस्ल लाड रही होती है। तो सारी दुनिया में उसकी प्रतिध्वनियाँ गूँजती है।"[1] इसमें ईरानी क्रांतिकारी लेखकों की कथाओं के साथ साथ नासिरा शर्मा की 'पहली रात' कहानी भी है। इसमें कवियों के

---

1. पुनरच - सं. दिनेश द्विवेदी - मार्च 1983 (संपादकीय)

स्वानुभवों का वर्णन भी है जो अन्याय के प्रति लडने के लिए उत्तेजना देती है। रिपोतार्ज में नासिरा शर्मा की तिसरी ईरान यात्रा की झलक प्रस्तुत की गयी है जो उनके लेखन की बहुआयामी प्रतिभा का दर्शन कराती है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि सन् 1948 में इलाहाबाद में जन्मी नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व अपने आप में मिसाल रहा है बचपन से साहित्यिक माहोल में पली-बढी नासिराजी ने अपने माँ से अधिकतर प्रभावित रही। पिता की मृत्यु के बाद माँ ने जिन परिस्थितियों में घर को संभाला वह काबिले तारीफ है। नासिराजी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. और दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए. उपाधि प्राप्त की। अध्यापन कार्य करते समय उन्होंने अपने ज्ञान से छात्रों को न सिर्फ प्रभावित किया बल्कि अध्यापक का सच्चा दायित्व भी निभाया है। उन्होंने पत्रकारिता तथा रेडियो पर भी कार्य कर अपनी प्रतिभा का दर्शन कराया है। रामचंद्र शर्मा जी के साथ उनका दाम्पत्तिक जीवन बडा ही सामंजस्य और सुखमय रहा है। दोनों परिवारों के धार्मिक, सांस्कृतिक रीति-रिवाज़ अलग होने के बावजूद प्रबल इच्छाशक्ति और पति के सहयोग के बल पर उन्होंने अपने दांपत्य जीवन को ताज़गी देकर सफल बनाया है।

नासिरा शर्मा ने साहित्य के क्षेत्र में विगत 35 वर्षों से निरंतर लेखन किया है। उन्हें साहित्य सृजन की प्रेरणा अपने परिवार से मिली है। नासिराजी ने उपन्यास, कहानी, नाटक, बालसाहित्य, पत्रकारिता, रिपोतार्ज, साक्षात्कार, सर्जनात्मक लेखन, आलोचना लेखन, स्तंभ लेखक, संपादन कार्य, अनुवाद, आदि साहित्य की लगभग सभी विधाओं लेखनी चलाई है। प्रायः कुछ साहित्यकारों को यदि छोड़ा जाए तो कथा साहित्य से मुस्लिम परिवेश और मुस्लिम जीवन गायब सा दिखाई देता है। नासिराजी ने अपने

साहित्य में मुस्लिम परिवेश पर बारीकी के साथ लेखन किया है, जिससे पाठकों को मुस्लिम संस्कृति को समझने में आसानी होती है। इनकी रचनाओं के यदि एक तरफ मुस्लिम समाज जीवन की सच्चाइयाँ कड़वाहट के साथ सामने आई है, तो दूसरी तरफ हिन्दु समाज का वह तबका भी जो धार्मिक अंधविश्वासों से घिरा है।

नासिरा शर्मा के साहित्य का कैनवास अंतरराष्ट्रिय स्तर पर फैला हुआ है। नासिरा जी के पात्रों में ईरानी, अफगानी, ईराकी, पाकिस्तानी और अन्य कई देशों की नारियों का समावेश हैं। वह उन्हें हमारे समक्ष लाकर हमें विचार करने के लिए मज़बूर करती है कि इन स्त्रियों की स्थिति भी हमारे देश के स्त्रियों से कुछ ज़्यादा अलग नहीं है। पत्रकारिता इनके लेखन का एक ऐसा क्षेत्र रहा है जिसके कारण देश-विदेश घूमने का उन्हें सिर्फ मौका ही नहीं मिला है, उसमें समाज के संघर्षों को नज़दीक से देखने का अवसर भी मिला है। खुलापन इनकी रचनात्मक लेखन की ही नहीं बौद्धिक लेखन की भी विशेषता है।

नासिराजी अपने कथानकों के माध्यम से सूक्ष्मतम मानवीय संवेदनाओं को केंद्रित किया है। व्यक्ति के जीवन यापन के लिए अत्यावश्यक वस्तुओं को मुहिया कराना ही जिन्दगी जीना नहीं, बल्कि व्यक्ति बाहरी ज़िन्दगी के साथ साथ एक आंतरिक जिन्दगी भी जीता है, वह जिन्दगी एहसास के धरातल पर होती है। जिसे समझने और महसूस करने को आवश्यकता होती है। नासिराजी ने अपने रचनाओं में इसी सूक्ष्मतम मानवी संवेदनाओं को स्पष्ट किया है।